मुकन्दन की मलयालम कहानियों "कैक्कुंबिलिले वेल्लम" का हिन्दी अनुवाद

(एम. फिल् हिन्दी उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध)

शोध–निर्देशक
प्रो. गंगा प्रसाद 'विमल'

शोध छात्रा
सुस्मिता के. ई.

भारतीय भाषा केंद्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110067

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
School of Language, Literature & Culture Studies
New Delhi-110067

Centre of Indian Languages Date: 17/5/2004

DECLARATION

I declare, that the material in this Dissertation entitled **"MUKANDAN KI MALAYALAM KAHANIYON 'KAIKKUMBILILE VELLAM' KA HINDI ANUVAD"** submitted by me is original research work and has not been previously submitted for any other degree of this any other University/ Institution.

Susmi

(Susmitha. K. E.)
Name of the Scholar

Prof. Ganga Prasad Vimal
(Supervisor)
Centre of Indian Languages,
School of Language, Literature
and Culture Studies
Jawaharlal Nehru University,
New Delhi-110067

Prof. Naseer Ahmad khan
(Chairperson)
Centre of Indian Languages,
School of Language, Literature
and Culture Studies
Jawaharlal Nehru University,
New Delhi-110067

समर्पण

पूज्य माँ–पिताजी को

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

भूमिका..... i-viii

प्रस्तावना---------- ix-xiv

अपनी ओर से---------- xv-xix

अनुदित कहानियों का नाम:

जल छाया---------- 1—14

रिक्शावाला पप्पू के भविष्य की ओर एक झांक---------- 15—28

हमारे बच्चे ---------- 29—46

देहात---------- 47—66

गाड़ी में एक परिवार ---------- 67—69

माको भाई और ड्रैगन ---------- 70—79

Bibliography---------- 80—82

A Chronicle of writings translated from Hindi to Malayalam 83

भूमिका

अनुवाद : एक सांस्कृतिक सेतु

अनुवाद मानव सभ्यता के साथ ही विकसित एक ऐसी तकनीक है जिसका अविष्कार मनुष्य की बहुभाषिक विकास के कारण उपजी स्थितियों की विडम्बनाओं से बचने के लिए हुआ था। अक्सर अनुवाद के इसी संदर्भ में बेबल की कथा का उल्लेख किया जाता है। बाइबिल की इस मिथकीय कथा के अनुसार मानव ने जब सिनार देश में एक अपूर्व नगर एवं मीनार बनाकर यहोबा से टक्कर लेना चाहा तो उसने उनकी भाषा में भेद उत्पन्न किया जो आपसी फूट का कारण बना। ऐसा कहा जा सकता है कि मानव ने भाषाओं के इस बेबल की स्थिति में ही अनुवाद की आवश्यकता महसूस की और उसका आविष्कार किया।

विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जनता के बीच अंतः संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की दार्शनिक एवं जीव वैज्ञानिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। अनुवाद मानव की मूलभूत एकता का, व्यक्ति चेतना एवं विश्वचेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भाषाओं के गहन स्तरों पर पायी जाने वाली मानव की मूलभूत एकता के बारे में जार्ज स्टीनर लिखते हैं : अनुवाद के द्वारा हम मानव की उस आधारभूत सार्वभौम, जनितकीय, ऐतिहासिक एवं सामाजिक एकता का अनुभव करते हैं जो भाषाओं के बाहरी भेद के बावजूद

मानवीय भाषा के प्रत्येक मुहावरे की तह में निहित है। अनुवाद करने का तात्पर्य है दो भाषाओं की बाह्य विभिन्नताओं की तह में जाकर मानवीय अस्तित्व के समान तत्त्वों को प्रकाश में लाना। मानव की खोयी हुई सार्वभौम सामान्य भाषा की मिथकीय कल्पना यहाँ चरितार्थ होती है। संस्कृति के व्यतिरेक के कारण भाषाओं की संरचनाएँ एवं अभिव्यक्ति भिन्न–भिन्न हो जाती है और इसलिए एकता के बिन्दु प्रायः नज़र नहीं आते। ऐसी स्थिति में बहुभाषा विश्व जनता की बीच अनुवाद एक सुदृढ़ सांस्कृतिक सेतु का कार्य करता है। यह एक ऐसा सेतु है जिसके माध्यम एवं दूरी के अंतराल को पार किया जा सकता है।

संस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यंत ही महत्वपूर्ण रहा है। धर्म एवं दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य एवं व्यवसाय, राजनीति एवं कूटनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध है। संस्कृत की प्रगति वस्तुतः अनुवादरूपी धुरी पर आश्रित है। अतः एक ऐसे चक्र की परिकल्पना की जा सकती है जो संस्कृति के भौतिक, भावनापरक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं को गतिशील बनाने में अनुवाद के योगदान को दिखा सकता है।

इन खंडों में संस्कृति का जो विकास हुआ है, वह एक दूसरे का पूरक है। संस्कृति के निर्माण की प्रकिया में विचारों के आदान–प्रदान का

बड़ा हाथ रहा है और यह आदान–प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाया है।

उदाहरण के लिए – बाइबिल तथा पाश्चात्य साहित्य का भारतीय भाषाओं और भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों एवं भारतीय साहित्य का यूरोपीय भाषाओं में जो अनुवाद हुआ, उसने पूर्व एवं पश्चिम के अंतर की पुरानी कल्पनाओं को तोड़ दिया है।

प्राचीन काल की संस्कृतियों के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बैबिलोन की संस्कृति बहुभाषी लोगों की संस्कृति थी और उनके प्रशासनिक कार्य-कलापों तक में अनुवाद का महत्वपूर्ण हाथ था। रोम के लोगों ने संपूर्ण यवन संस्कृति को अनुवाद के माध्यम से अपनाया था। अरबों ने भारत के गणितशास्त्र, खगोलविज्ञान एवं आयुर्वेद के ग्रंथों का अनुवाद करके संस्कृति के विकास की भूमिका तैयार की थी। दार्शनिक एवं आध्यात्मिक ग्रंथों के अनुवाद ने भौतिक एवं आध्यात्मिक संस्कृति को कई प्रकार से विकसित किया है – उदाहरण के लिए – रामायण के संस्कृत एवं पाली से चीनी, इंदोनेशियाई, थाई, जापानी भाषाओं में अनेक अनुवाद हुए जिन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया की संस्कृति को बहुत गहराई से प्रभावित किया। आधुनिक जर्मनी के महत्त्वपूर्ण दार्शनिक शॉपनहॉवर ने उपनिषदों के अनुवाद से प्रेरणा ग्रहण की थी। शाहजहाँ के बेटे दाराशिकोह द्वारा अनूदित

सिर्रे–ए–अकबर नामक उपनिषदों के फारसी अनुवाद पर आधारित एक लैटिन अनुवाद उन्होंने पढ़ा था। उपनिषदों का यह लैटिन अनुवाद एन्त्युतिल दि पेरोन नामक फ्रेंच विद्वान ने किया था। पश्चिम की अनेक भाषाओं में हुए भगवद्गीता एवं पातंजलयोगसूत्र आदि का अनुवाद तथा मैक्समूलर द्वारा पूर्व के पवित्र ग्रंथ नामक ग्रंथमाला का प्रकाशन आदि ने पश्चिम एवं पूर्व की संस्कृतियों को एक दूसरे के करीब लाने का युगान्तकारी कार्य किया है।

संस्कृति का मूलरूप यदि आज भी लोगों के जीवन में ज्यों का त्यों मिल जाता है तो उनका श्रेय रामायण, महाभारत, भागवत् आदि के आधुनिक भारतीय भाषाओं में किए गए अनेक रूपांतरों को प्राप्त है।

सम्मेलनानुवाद अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति के युग में एक अनुपेक्षणीय कार्य है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं–अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रुसी–चीनी एवं अरबी के अतिरिक्त हिन्दी, स्पेनिश आदि भाषाओं का महत्व भी अनुवाद के क्षेत्र में बढ़ रहा है। मारीशस, फीजी, सूरीनाम आदि देशों को प्रमुख भाषा के रूप में और विभिन्न भारतीय भाषाओं को जोड़नेवाली भाषा के रूप में हिन्दी एक व्यापक अनुवाद माध्यम बनती जा रही है।

बीसवीं शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है और इस कारण से इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है।

अनुवाद अंतर्राष्ट्रीय बंधुत्व का ही नहीं, अपितु अंतर्देशीय बंधुत्व की स्थापना करने में भी मददगार है।

भारत की संश्लिष्ट तथा सामाजिक संरचना के कारण विद्वानों ने कभी तो भारतवर्ष को भाषा सामाजिक विकट विग्रह तो कभी भाषिक सामाजिक इकाईयों के मूल में विद्यमान एकात्मकता के कारण इसे एक 'भाषिक क्षेत्र' की संज्ञा से अभिहीत किया है। भारतीय जनगणना के अनुसार भारत में चार भाषा परिवारों की (भारोपीय, द्रविड, मुंडा या आस्ट्रिक तथा तिब्बती–चीनी परिवार) 1652 भाषाएँ बोली जाती हैं। इसमें बस चौदह भाषाओं को ही विद्वानों ने प्रधान भाषाएँ मानी गयी हैं। वे हैं : 1. असमिया, 2. उड़िया, 3. उर्दू, 4. कन्नड, 5.कश्मीरी, 6. गुजराती, 7. तमिल, 8. तेलुगु, 9. पंजाबी, 10. बंगला, 11. मराठी, 12. मलयालम, 13. संस्कृत और 14. हिन्दी। इन भाषाओं के बोलनेवालों की संख्या देश की कुल जनसंख्या का 98 प्रतिशत है। अब सवाल यह उठता है कि इतनी भिन्नता होते हुए भी भारत की एकता कैसे कायम रहती है? चाहे वह सांस्कृतिक एकता हो, सामाजिक एकता हो या वैचारिक एकता? इस एकता को कायम करने में साहित्य का सबसे प्रथम स्थान है। जब साहित्य सांस्कृतिक एकता को कायम करता है तो उसका सारा श्रेय अनुवाद को जाता है। क्योंकि यदि

एक भाषा का साहित्य उसी सीमित क्षेत्र में रहें तो प्रस्तुत सांस्कृतिक बंधुत्व की स्थापना कदापि नहीं हो पाएगा।

इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय एवं अंतर्देशीय सांस्कृतिक बंधुत्व स्थापित करने में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस संदर्भ में सांस्कृतिक सेतु का काम करने वाले अनुवाद का प्रभाव मेरे शोध-प्रबंध की चुनाव में भी प्रकाश डाला, यह मैं भूल नहीं सकती।

मेरी मातृभाषा मलयालम है और मलयालम साहित्य के प्रति मेरी रूचि गहरी है। यह समझ कर मेरे आदरणीय आचार्य विमल जी ने मुझे सुझाव दिया कि, मैं अपना शोध-प्रबंध का आधार मलयालम साहित्य बनाऊँ। इस संदर्भ में उन्होंने मुझे एक और सुझाव दिया कि क्यों न मैं अपने ही क्षेत्र के मुकुन्दन की कहानियों का अनुवाद करुँ? मुझे यह बात बहुत पसंद आई। इस प्रकार मैंने एम मुकुन्दन के 'चुल्लू भर पानी' का अनुवाद कार्य शुरू किया।

इस पूरे काम में सहयोग के लिए सबसे पहले मैं अपने शोध–निर्देशक, डॉ. गंगा प्रसाद 'विमल' जी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगी, जिन्होंने इस कार्य के लिए मुझे उत्साहित किया। डॉ. विमल स्वयं साहित्य के आस्वादक एवं अनुवादक हैं। उन्होंने प्रस्तुत शोध–कार्य में मुझे

बेझिझक सहायता प्रदान की। भारतीय भाषा केंद्र के पूर्व अध्यक्ष प्रो. मैनेजर पाण्डेय के प्रति विशेष आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, क्योंकि वे सदैव शोध एवं अनुवाद संबंधी हमारी समस्याओं के निदान के लिए हमारी तर्कपूर्ण एवं शोधपूर्ण दृष्टि विकसित करने की प्रेरणा देते रहे। मैं भारतीय भाषा केंद्र के अध्यक्ष प्रो. नसीर अहमद खान के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपने निर्मल स्वभाव के अनुरूप सदैव हम लोगों का उत्साह बढ़ाया है। भाषा की वैज्ञानिक युक्तियों का परिचय हमें उन्हीं से मिला है।

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियन श्री सतीश खुल्लर, केंद्रीय साहित्य अकादेमी के लाईब्रेरियन एवं मलयाला विभाग के सहायक पद्मनाभन जी के प्रति भी मैं बहुत आभारी हूं।

मेरी पूर्व अध्यापिका डॉ. गीता टी. के. जो महात्मा गांधी गवर्मेंट आर्ट्स कॉलेज की प्राध्यापिका है वे शुरू से लेकर अंत तक मेरे काम को संभालती आई हैं। मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

अपने माँ–बाप, भाई–बहन–जीजाजी एवं उनके छोटे बच्चे की ओर से मुझे जो प्रोत्साहन और प्यार मिला वह मैं कभी भूल नहीं सकती। छात्रावास की उबते वातावरण से मुझे बस अपने मित्रों का सहारा था, इन्हीं मेरे मित्रों से मुझे अनुवाद कार्य को सफल बनाने में भी इतनी मदद मिली कि, मुझे नहीं पता कि मैं उनके बारे में क्या लिखूं? मेरी मित्र इंदु गुप्ता और कमलेश

कुमारी ने तो अपना कीमती वक्त निकालकर 'स्लांग लैंग्वेज' को अनूदित करने में मेरी मदद की, मेरी बस यही प्रार्थना है कि परम्शक्ति उन्हें पूरी कामयाबी दें।

इस संदर्भ में मैं उस व्यक्ति के प्रति भी अपना शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ, जिन्होंने कम समय में टंकण कार्य संभाला। इसलिए मैं अपने भाषा केंद्र के विक्रम सिंह को भी शुक्रिया अदा करती हूँ। मेरी बस यही प्रार्थना है कि भगवाना उन्हें पूरी कामयाबी प्रदान करें।

अब मैं उस बड़ी शक्ति को अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर उसके सम्मुख नतमस्तक हूँ कि उसने मुझे यह जीवन और बोध प्रदान किया कि मैं सफलतापूर्वक अपना काम पूरा करूँ।

सुस्मिता नाम्बियार

अनुवाद संबंधी विमर्श

मानव सभ्यता के विकास के इतिहास में आज सांस्कृतिक बंधुत्व का बहुत बड़ा योगदान है। इस विश्वबंधुत्व का एकमात्र सेतु है 'अनुवाद'। विश्व में अनेक भाषाएँ हैं। अनेक अक्षर भाषाएँ भी हैं, उनके सृजन को अन्य भाषाओं तक पहुंचाने का काम अनुवाद द्वारा संपन्न होता है। संप्रेषणीयता के स्तर पर विश्व को विशेषकर विश्व संस्कृति को एक–सूत्र में बांधने में अनुवाद का दायित्व सराहनीय है।

आज जब सारा विश्व सामाजिक पुर्नव्यवस्था पर एक नए सिरे से विचार कर रहा है और व्यक्ति तथा समाज को एक नव्य स्वतंत्र दृष्टि मिली है, वहीं हम भी व्यक्ति और देश को विश्व के परिप्रेक्ष्य में देखने–समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद का महत्व और भी बढ़ जाता है। किसी समाज और देश की अभिव्यक्ति भाषा की सीमा के कारण एक क्षेत्र विशेष तक सीमित रह जाए और दूसरे तक न पहुँच पाये तो विश्व स्तर पर एक नव्य सामाजिक पुर्नव्यवस्था की बात सार्थक कैसे हो सकती है? इस संदर्भ में अनुवाद संबंधी मेरा प्रस्ताव 'क्षेत्रीय भाषा साहित्य का अनुवाद' अनेक दृष्टियों से सार्थक सिद्ध हो जाता है। क्योंकि क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के अनुवाद के साथ ही अपने पड़ोस की खिड़की खुलने से विश्व साहित्य की खिड़की खुलने की संभावना बढ़ जाती है। भारतीय भाषाओं में मलयालम भाषा का साहित्य अत्यधिक विचारणीय है, तथा सभी भारतीय और विदेशी भाषाओं में उससे अनुवाद हुए हैं। आधुनिक संदर्भों में

उसके महत्त्व को देखते हुए मैं आपका परिचय मलयालम-साहित्य से कराना चाहती हूँ।

भारत देश के दक्षिण में स्थित एक छोटा क्षेत्र है 'केरल'। उसकी ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परंपरा बड़ी गौरवशाली रही है। आज भी केरल की संस्कृति व सभ्यता का प्रभाव एवं महिमा चारों ओर फैल रही है। मध्यमवर्गीय जनता की संस्कृति को बढ़ावा देने वाले केरल में उसी मध्यमवर्गीय जनता का जीवन साहित्य की आत्मा बनी है।

मलयालम कथा साहित्य का विकास

मलयालम कथा साहित्य के विकास को विद्वानों ने चार भागों में विभाजित किया है। 1891–1930 तक की कथा साहित्य 'नवोत्थान–काल्पनिक भावों' से प्रभावित कथा काल माने जाते हैं। अनेक कथा पात्रों उपकथाओं एवं देहाती वातावरणों से भरी हुई कथाओं की भरमार उस जमाने में थी।

1930–1940 तक की कथा ने अपनी आत्मा के रूप में 'प्रगति' को ले लिया। प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद से प्रभावित कहानियों का खूब प्रसार उस समय में हुआ। किसानों की समस्याओं एवं साधारण जनता की जीवन संघर्षों का सार कथाओं ने ले लिया।

1950–1960 तक आकर कथाओं का प्रमुख भाव 'संवेदनाओं' ने ले लिया। इस कालखंड के कथाकार महानगर की जटिलताओं में फँसी साधारण जनजीवन एवं एकांतता, मानसिक जटिलता आदि भावों पर कहानियाँ रचने लगे।

1960 के बाद मलयालम साहित्य में कथाओं में आधुनिकता का गहरा प्रभाव पड़ा। उसी का रास्ता पकड़कर उत्तर आधुनिकता का भी प्रवेश हुआ। इस तरह आज मलयालम कथा साहित्य उत्तर आधुनिकता के रास्ते पर आगे बढ़ रही है।

इस संदर्भ में मेरे द्वारा अनूदित कहानी संग्रह 'चुल्लू भर पानी' एवं उसके स्रष्टा कथाकार एम. मुकुन्दन के बारे में जानना बहुत जरूरी है क्योंकि उनकी रचनाओं में चाहे वह उपन्यास हो, कहानी हो या लेख, वही जीव–स्पंदन प्रस्फुटित है।

मुकंदन साहित्य का एक निरंतर प्रवाह

कथाकार एम. मुकुन्दन का जन्म 1942 में मय्यज़ि में हुआ। यह प्रदेश एक केन्द्र शासित प्रदेश है। बचपन से ही बीमार मुकुन्दन ने 1981 में लिखी अपनी आत्मकथा रूपी रचना "मुकुन्दन की लिखावट" में ऐसा लिखा था – "मेरी उस बीमारी ने मुझे साहित्यकार नहीं बनाया बल्कि मेरी बीमारी ने मेरी चिंतन धाराओं को हमेशा प्रभावित किया था।"

अपने बचपन के बारे में हर एक साहित्यकार लिखते हैं। लेकिन मुकुंदन की कथाओं में उनका बचपन एक 'अपूर्ण अवस्था' है, वह एक लंबी कहानी बनकर रह जाती है। यानी कि उनकी रचनाओं में बचपन एक 'दर्द भरी दासतां' है। और गांव, उसके पास वाला छोटा शहर उसके बाद एक महानगर – मुकुंदन की जीवन यात्रा ऐसी है। मय्याज़ि नाम के एक छोटे से गांव में जन्म लेकर उन्होंने अपनी जीविका का स्रोत महानगर दिल्ली में ढूंढ लिया। दिल्ली फ्रेंच एम्बेसी में वह काम कर रहे थे।

सार्थर का गहरा प्रभाव मुकुंदन की रचनाओं में साफ दिखाई देता है। उनमें पड़ी सार्थर का प्रभाव उनकी The Nause a, No Exit, The Wall आदि रचनाओं में साफ दिखाई देता है। The Nausea – की छाया प्रभाव उनकी मलयालम उपन्यास 'दिल्ली' पर पड़ा है। "हर द्वार में घंटियां बज रही है" नामक उपन्यास पर भी सार्थर की तात्विक चिंताओं का गहरा प्रभाव विद्यमान है।

मुकुन्दन की रचनाओं का एक छोटा उल्लेख

मलयालम साहित्य के अन्य साहित्यकारों की तरह मुकुन्दन का भी शुरुआत यथार्थ के धरातल से शुरु होती है। वे यथार्थ के सबल प्रवक्ता हैं।

मध्यमवर्गीय जनता के पारिवारिक संवेदनाएं, उनके छोटे–छोटे सपने, गरीबी, बेरोजगारी की समस्याएं, जीवन की पीड़ा एवं स्पर्धाओं का अंकन आदि

विषयों का गहरा चित्रण उनकी रचनाओं का मूल स्रोत रहा। चाहे वह 'जल छाया' हो, 'फोटो' हो, 'हमारे बच्चे' हो या 'देहात' हो।

एम. मुकुन्दन की रचना शैली पर नजर डालने पर यह पता चलेगा कि उनकी रचना की गति आत्म प्रकाशन की ओर ज्यादा प्रभावित है। निषेध एवं जीवन की विडंबनाओं का तीखा स्पर्श उनकी कहानियों की मुखमुद्रा है। उनकी रचना धारा यथार्थ बोध से रूमानियन तक आकर वहां से मिथकीयता की ओर बढ़ती हुई दिखाई देती है। एम. मुकुन्दन की चुनी हुई रचनाओं की सूची निम्नलिखित है –

1. ऑफीस (दफ्तर)
2. चाय
3. किसान
4. बैलगाड़ी वाला चेकू
5. पेशाब
6. नये चेहरे
7. माँ का दूध
8. भेड़िया
9. चिड़िया
10. वेश्याओं के लिए एक मंदिर
11. वे गा रहे हैं
12. रस्सी
13. अंजन

14. जीने वाले, मृत हुए लोग

15. प्रभात, से प्रभात तक

16. राधा – सिर्फ राधा

17. सातवाँ फूल।

18. डलही (दिल्ली)

आदि.....

अपनी ओर से

हम सब जानते हैं कि अनुवाद का अर्थ रचना संस्कृति को पुनः सृजित करना है। किसी भी रचना का अनुवाद करते समय दो सवाल सहज ही सामने आ जाते हैं, पहला तो यह कि इस रचना का अनुवाद क्यों? और दूसरा, उस रचना का अनुवाद कैसे? यानी पहला सवाल रचना के चुनाव और दूसरा अनुवाद की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। जब अनुवाद की प्रक्रिया का प्रश्न आता है तो प्रायः माना जाता है कि अनुवाद मूल के सबसे ज्यादा नजदीक हो।

इस अनुवाद प्रक्रिया में मुझे कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। सबसे बड़ी समस्या थी दो संस्कारों की भिन्नता। केरल जैसे साधारण जन वाले क्षेत्र की कहानी महानगरीय सभ्यता की जड़ों वाली हिन्दी में अनुमोदित करते समय सांस्कृतिक अंतर आपस में जुड़ जाते हैं। यानि कहानियों की अंतःसत्ता का उसी रूप में आस्वादित नहीं कर पाएगी। देहाती सभ्यता की नग्नता कहां तक पाठकों तक पहुँच पाएगी इसमें मुझे अब भी शंका है।

किसी भी भाषा से अनुवाद का पहला रूप है बातचीत का अनुवाद। मामूली लोगों की सामान्य बातचीत को अनुदित करने में कोई उलझन नहीं है। मलयालम–हिन्दी अनुवाद के संदर्भ में हमें बस इतना करना है कि, हिंदी

में मूल का भाव किसी न किसी रूप में उतार देना है। लेकिन जब यह अनुवाद साहित्यिक रचनाओं से जुड़ जाता है कठिनाई काफी बढ़ जाती है। यानी कि इस संदर्भ में अनुवाद का मतलब द्रविड परिवार की एक प्रांजल भाषा से आर्य परिवार की एक काफी नवीकृत और परिवर्धित भाषा का अनुवाद रहा। इस संदर्भ में निबंधकार बेकन का विचार याद आ रहा है। उनकी स्मरणीय सूक्तियों में से एक का भावार्थ यह है कि किसी बात को पढ़ना, समझना और उस पर बातें करना अपेक्षाकृत आसान है। मगर उन्हीं बातों को विधिवत लिखने की बात जब उठती है तभी लेखक की कुशलता की असली परख होती है। इस समय 'स्लैंग लैंग्वेज' की समस्या, सामाजिक व साहित्यिक भिन्नता आदि से लेकर छोटे–छोटे शब्दों के अर्थों तक की समस्या अनुवादक को परेशान करा देती है। इन सब समस्याओं को पार करने के लिए मुझे दिन–रात एक करके पूरा आठ महीना काम करना पड़ा। इन सबके बावजूद भी कहीं–कहीं पर 'स्लांग' प्रयोग का वही रूप मुझे प्राप्त नहीं हुआ। लेकिन उन स्थानों पर मैंने साधारण जनता की भाषा शैली का प्रयोग किया है।

मुकुंदन ग्रामीण सभ्यता के वक्ता है। इसी कारण उनकी भाषा देहाती है। इस देहाती भाषा को उसी 'स्लांगा' में अनूदित करने की बहुत

कोशिश मैंने की है। कहीं-कहीं मेरे इस प्रयत्न में कमी आ गयी है, तो मुझे यकीन है आप सहृदय मुझे माफ कर देंगे।

कथाकार की मानसिक विचरण केरलीय वातावरण में है। उस वातावरण को उसी प्रकार कथा बीजों में लाने का कठिन प्रयास मैंने किया है। इसी कारण कहीं–कहीं पर मुझे पात्रों के नामों पर थोड़ा बदलाव लाना पड़ा। जैसे कि 'माको–भाई' का नाम। मलयालम में प्रस्तुत नाम को क्रैस्तव–संप्रदाय के अनुसार प्रयोग किया गया। लेकिन अनूदित रचना के पाठकों की मदद के लिए मैंने उसे 'भाई' का दर्जा दिया।

एक अनुवादक को तब सुकून प्राप्त हो जाता है जब वह किसी भी भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करके उस अनूदित रचना को लाभान्वित, सरल एवं स्पष्ट बना सकें। उस अनूदित रचना की संरचनात्मक वैशिष्ट्य एवं अभिव्यक्ति की तरलता भी अनुवादक को सार्थकता प्रदान कर देता है। मैंने भी एक नव-अनुवादिका की भूमिका को सार्थक बनाने की पूरी कोशिश की है। इसमें अभिव्यक्ति तथा संप्रेषणीयता कहाँ तक सफल है यह सहृदय जन ही बता सकते हैं। लेकिन पूर्ण विश्वास के साथ मैं यह कह सकती हूं कि मैंने अनुवादक का एवं अनुवाद का एक सबसे बड़े दायित्व की पूर्ति अवश्य किया है – सांस्कृतिक बंधुत्व की स्थापना।

शब्दों को अनूदित करने की समस्या को सुलझाने के लिए मुझे विशेषज्ञों[1] एवं कहानीकारों से वार्तालाप कर समाधान खोजना पड़ा। कहानियों में आए कुछ ऐसे स्लांग शब्दों' के लिए मुझे विद्वानों[2], शब्दकोषों[3] एवं अनुवादकों[4] से विमर्श करना पड़ा तथा कई पुस्तकालयों की सहायता भी लेनी पड़ी।

यद्यपि दो सभ्यताओं में अंतर अवश्य है फिर भी आखिर दोनों भाषाएँ भारतीय है। इसी कारण कथाओं की अंतसत्ता को पहचानने एवं उसका आस्वादन करने में पाठकों की कदापि विषमता नहीं होगी। आखिर भारत वासियों की मूलवृत्ति तो एक ही होती है, यह छूट मेरे अनुवाद को अधिक आसान बनाती है। मलयालम भाषा में प्रचलित मुहावरेदार शैलियों का उसी रूप में अनूदित करने का मैंने प्रयास किया है। लोकोक्तियों का प्रयोग कहानियों में बहुत कम था।

---

1 डॉ. गंगाप्रसाद विमल, डॉ. मैनेजर पाण्डेय, प्रो. नजीर अहमद खान, डॉ. रामचंदन वी, डॉ. गीता के टी. के।

2 जवाहरलाल नेहरु पुस्तकालय, (नार्थ एवं साउथ कैम्पस) पुस्तकालय, साहित्य अकादेमी, भारतीय अनुवाद परिषद् पुस्तकालय

3 मलयालम हिन्दी शब्द कोष – प्रो. एम. आई. वारियर, मलयालम हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोष – माधवन पिल्लै, आंग्लो हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोष, आर. सी. पाठक, ट्रै लिंग्वल – हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोष, माधवन पिल्लै, हिन्दी–मलयालम–अंग्रेजी – प्रो. एन.के. जोसफ।

4 डॉ. गंगाप्रसाद विमल, डॉ. रामचंदन वी, डॉ. गीता के टी. के।

आलोचक सच ही कहते हैं कि सच्चे दिल से अनुवाद करने पर हमें एक प्रकार का सुकून प्राप्त हो जाता है, मानो हमने किसी मौलिक साहित्य का सृजन किया हो। इस सुकुन का अनुभव अब मैं महसूस कर रही हूं। क्योंकि यह कहानी संग्रह मेरे अपने गांव के वातावरण को लेकर चलती है।

इस प्रकार मेरा प्रयत्न आज सफलता की किरण को छू रहा है। इसमें उस महाशक्ति का साथ, मेरे माता पिता अनुग्रह एवं मेरे गुरुजी की कृपा सम्मिलित है।

मेरे उपर्युक्त प्रयत्नों एवं मुझ पर बरसे गुरुजनों एवं दैविक शक्तियों के अनुग्रहों के साथ मैं यह लघु शोध-प्रबंध आपके समक्ष समर्पित कर रही हूँ।

सुस्मिता नांबियार

जल छाया

जल छाया

हे भगवान मेरा बेटा कुएँ में गिर गया..." बाबू की माँ चिल्लाने लगी।" कोई आकर बचाओ..."

कुएँ की ओर सूरज की जो किरणें पड रही थी उसी ओर से बाबू को नीचे गिरते हुए जानकी ने देखा। उसके नहाने का पानी कड़ाही में भरकर, पहनने वाला निक्कर कुएँ की चबूतरे पर रखकर वह वापस जा रही थी। तभी यह हादसा हुआ। हाँ उसी समय हुआ था यह हादसा।

सुबह से बाबू गुस्से में था। कांजी दिया जो इडली के लिए ज़िद्द किया। फटा निक्कर न पहनने के लिए गुस्सा हो गया।

जानकी को एक साथ गुस्सा और दुख आगया:

"तू क्या मजिस्ट्रेट का बेटा है? तुम्हारे बाप को दारू पीकर नारा लगाने के अलावा आता क्या है? कांजी के बदले इडली मैं कहाँ से लाऊँ?

बाबू मुँह बनाकर बैठा रहा।

कुएँ के अंधेरे में सोना उबलने लगा। पानी के फीके रंग के चारों ओर सोना फेनिल होने लगा।

फेनों के बीच से वह धीरे–धीरे नीचे की ओर फिसलने लगा। सोने का पानी उसे मुलकिन करने लगा।

"बेटा..... बाबू।"

हाथों से खेतकर ऊपर आने के कोशिश के बीच उसकी कानों में किसी की आवाज़ पडी। वह शब्द बहुत करीब से आ रही थी।

"आ जाओ ..... डरना नहीं।"

नरम से एक हाथ ने उसके हाथों को पकड लिया।

उन नरम हाथों मे सूरज कि किरणों की नरमी थी।

"क्या तुम मुझे जानते हो? मैं हुँ वासू मामा।"

वह हँसने लगा।

मंछली कमरे में बायें ओर वासू मामा की काँच की एक फोटो है। पुराना होने के कारण वह फीका पड गया था। उस फोटो को चारों तरफ से कीडे खा चुके थे। कभी–कभी काँच के ऊपर एक सींगेदार कीडा आता था। स्टूल पर चढ़कर वह उसे देखते थे। वासू मामा को उसने बस फोटो में देखा था।

मुख उठाकर बाबू ने वासू मामा को देखा। बिल्कुल फोटो जैसा ही वेश। आधी बाजू वाला सफेद कमीज और कंधे पर अंगोछा।

"चलो हम धर पहुँच गये।"

द्वार के बाहर एक कुलीन स्त्री उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

"बाबू क्या तुम मुझे जानते हो?"

"लक्ष्मी मामी .....

"शाबाश, देखा न सही, फिर भी तुम सबको पहचानते हो।"

"लक्ष्मी मामी ने उसको एक चुम्मा दिया। जब जानकी के पेट में था, तब मैं यहाँ आयी थी।"

गीले कपडों में वह ठंडा होने लगा। यह देखकर मामी एक तौलिया लेकर उसे पोछने लगीं। उसके गील घुंघराले बालों में सोने के रंग के फेन छिप गये थे। उसका प्यार से पोंछना उसको पसंद आगया। मोटी बाहों में सोने का कंगन झिलमिला रहा था।

उसको माँ के बिना कंकण वाले पतली बाहों की याद आ गयी। उसकी कलाई पर एक काला धागा था।

"यक धागा किसलिए है माँ?" बाबू ने पूछा।

"जा शैतान, जाके सो जा।"

माँ बोली थी।

लेकिन रात को अपनी शुष्क हाथों से बेटे को कलेजे से लिपटा के लेटते समय आँसू से नरम शब्दों में जानकी ने उससे कहाः

"किसी से मत कहना मेरे लाभ, कुंजीकन्नन मलय[1] मंत्र जपकर दिया था। तुम्हारे बापू को सही रास्ता दिखाने के लिए..."

बाबू माँ की छाती से और लिपटकर लेटा रहा।

"लो यह ट्राउसर पहनो।"

लक्ष्मी मामी ने कहा।

"गीले कपउे से जुकाम हो जाएगा।"

उसे यकीन नहीं हुआ। कई दिनों से वह एक नीला ट्राउसर पहनना चाहता था!!

ट्राडसर लेकर एक मिनट के लिए वह स्तब्ध रह गया।

"शर्मिंदा नहीं होना। मैं तेरी मामी हूँ।"

---

1 जादूगर का नाम

वह हँसने लगी। पहली बार देख रहा हूँ इस मामी को।"

पीछे मुडकर गीला ट्राउसर उतारकर वह नया नीला ट्राडसर पहनने लगा। हुक लगाने में मामी ने उसकी मदद की।

"अब तुम कितने में हो बेटा?"

"चौथे में।"

"तो तू बडा हो गया रे।"

सोने की झिलमिल सी आवाज़ में वह हँसने लगी। उन्होंने उसके चेहरे पर पाउडर लगाया और बालों को बनाया।

"बाबू को भूख लग रही होगी।"

वासू मामा ने कहा।

'सुबह से उसने कुछ खाया नहीं।'

लक्ष्मी मामी उसका हाथ पकडकर अन्दर लेगयी। रसोई में ज़मीन पर पडी तख्ती पर उसे बिठाया। उन्होंने केले के पत्ते में गरम इड्डली और चटनी दिया। पास बैठकर वह उसके खाने का अंदाज़ प्यार से देखने लगी।

बीच में मामी ने इड्डली का एक टुकडा चटनी लगाकर उसके मुहँ में रखदिया। तब भी सोने का कंकण झिलमिला रहा था।

"लक्ष्मी मामी के बच्चे नहीं है क्या?"

मामी ने एक लंबी साँस ली। एक मिनट का मौन वहाँ आया। उसके बाद वह बोलीः

"मेरे लिए तो बाबू है न? फिर क्यों और बच्चे?"

वह हँसने लगी। चबूतरे पर बैठकर पान खाने वाला वासू मामा भी हँसने लगा। बाबू हैरान होगया कि किसी–किसी को बच्चा क्यों नहीं होता है।

"क्या सोच रहे हो बेटा?"

"कुछ नहीं।"

"माँ के पास जाना है क्या?"

"धूप ढलने के बाद नानू दादा को भी मिलकर वापस जायेंगे। ठीक है बेटा।"

लक्ष्मी मामी ने गरम दूध का गिलास उसको दिया। वह गिलास को देखने लगा। कब पीया या दूध? याद नहीं। दूध का स्वाद क्या होती है, वह भी भूल गया था।

"तुम्हें दूध पसंद नहीं आया बेटा?"

"आया, पसंद आया। क्या मिठास है?"

यहाँ के गायों का दूध ज़्यादा मीठा है। शक्कर मिलाने की ज़रूरत नहीं है। लक्ष्मी मामी ने कहा।

"तुम्हें गायों को देखना है क्या?"

"मारेगा तो नहीं न?"

'यहाँ की गाय को मारना नहीं आता।'

मामी ने उसका हाथ पकडकर गोंडा ले जाकर गायों को दिखाया। गोरी और सुन्दर गायें। सींग चाँदी के रंग के थे। जपा की डाल पर बैठने वाली छोटी चिडिया को उसने ध्यान से देखा। उसके छोटे–छोटे सीगों का भी सोने का रंग था।

मामी ने पूछाः

"तुझे एक फूल दूँ बेटा?"

"हाँ।"

उसने सिर हिला दिया।

मामी ने ऊपर की ओर उठकर एक नीला फूल तोडकर बाबू को दिया। अच्छी सुगंध वाला एक फूल।

तुम जिसे ज़्यादा चाहते हो उसे यह फूल देना चाहिए।

उसने वह फूल मामी को दे दिया।

मामी ने फूल लिया और उसको छाती से लगाकर सिर को चूमा। उनकी नरम छाती से चंदन की गंध आ रही थी।

"तुम माँ को चाहते हो न? माँ को देना चाहिए यह फूल।"

अचानक उसकी आँखें भर आयी। यह देखकर मामी घबरा गयी।

"क्यों रो रहे हो बेटा?"

"माँ मारेगी।" "हमेशा गालियाँ देगी और मारेगी भी।"

मामी ने एक बार फिर उसको छाती से लगाकर उसके सिर को सहलाया।

"जानकी को हमेशा गरीबी और क्लेश है। इसलिए नहीं कि तुमसे प्यार नहीं है। सुख क्या है, जीवन में कभी उस बेचारी ने जाना तक नहीं। बेटा तुम्हारी माँ जो है न वह रोने केलिए पैदा हुई है।"

बाबू को फिर रोना आगया।

तुम्हें पढकर बडा आदमी बनना है। तब तुम्हारी माँ का क्लेश दूर हो जाएगा।

"मुझे माँ से मिलना है।"

वह रोने लगा।

"नानू दादा से मिलने के बाद जायेगें।

लक्ष्मी मामी ने उसे छाती से उठाकर उसके गीले गालों को पोछलिया। उसके बाद मामी ने उसको एक गेंद बनाकर दी। पेड की छाया में मामी उसके साथ गेंद खेलने लगी। तब उसे लगा कि मामी उसके क्लास की अम्मिणी की तरह एक छोटी लडकी है। अम्मिणी ने एक बार कहा था कि वह नो साल की है।

"मामी की क्या उम्र है?"

"मेरी" मामी हँसने लगी।

"पैंतीस में मैं यहाँ आयी थी। यहाँ आकर अब .... मुझे याद नहीं। यहाँ किसी की उम्र नहीं बढती बेटा।"

मामी ने एक बच्चे की तरह उसकी गेंद को रोका। गेंद को हाथ में रखकर वह खिलखिलाकर हँसने लगी।

बाबू को एक बार फिर माँ की याद आ गयी। माँ इस तरह मामी की जैसी होती तो ..... उसने कभी भी माँ को इस तरह, हँसते नहीं देखा था..... बेचारी माँ। उसको हमेशा कष्ट सहना और रोना आता था।

मामी का खेलकूद बाबू को पसंद आया। जब भी वह गेंद फेंकता मामी बहुत उत्साह के साथ उसे पकड लेती थी और धीरे से उसकी ओर वापस फेंक देती थी।

उसकी प्रसन्नता और उत्साह देखकर उसे एक शरारत करने को मन करने लगा।

'फेंकने वाली सारे गेंद मामी पकडेंगी क्या?'

"हाँ। सब पकडेंगे।"

"ऊँचा फेंकू तो भी?"

"हाँ।"

उसने अपने हाथ का गेंद मामी की ओर ऊँचाई में फेंका। उसे लगा कि मामी यह गेंद छू भी नहीं पायेगी। लेकिन उसको हैरान बनाकर एक हंस की तरह मामी हवा में उठने लगी। पहनी हुई जरीवाली धोती उसके कमर के चारों ओर उठने लगी। बडी आसानी से गेंद को हासिल कर नीचे उतर आयी।

बाबू स्तब्ध रह गया।

"तुम्हें और गेंद खेलना है क्या?"

"नहीं।"

"क्या तुम थक गये बेटा? भूख लग रही है क्या?"

"मुझे माँ से मिलना है।"

"नानू दादा से मिलने के बाद माँ के पास जायेंगे।"

लक्ष्मी मामी बाबू का हाथ पकडकर तानू दादा के पास चलने लगी।

वासू माा वहाँ इंतज़ार कर रहा था।

"तानू दा।"

वासू मामा ने पलंग के पास बैठकर धीरे आवाज़ लगायी। एक पुराने पलंग पर सीधे लेटे हुए दादा ने आँखें खोल दी। पुतलियों का रोग सुनेहरा था। दादा आँखें मरोडते हुए उटकर बैठ गया। वासू मामा और लक्ष्मी मामी ने उसके पैर छुए।

"कौन है?"

"मैं हूँ वासू, लक्ष्मी भी है।"

"कौन है वह लडका?"

"जानकी का बेटा है, बाबू।"

नानू दादा ने बाबू को गंभीर रूप से देखा।

"बहुत जल्दी यहाँ आगया। है न?"

"नहीं दादा।" वासू मामा ने बोला।

"बाबू को वापस जाना है।"

दादा ने बाबू को पास बुलाया। वह दादा की गोद में बैठ गया। दादा की सासों मे पान की गंध थी।

"जानकी बहुत परेशानी में है दादा।"

वासू मामा ने कहा।

"पहनने तक केलिय कुछ नहीं है। बाबू का पूरा पेट भरे हूए कई दिन हो गये

"सब टीक हो जायेगा।"

दादा ने बाबू के बालो को सहलाया। दादा के नाखून सोने से बने थे।

"हम निकल रहे है। बाबू को जाना है।"

वासू मामा ने फिर एक बार दादा के पैर छुए, लक्ष्मी मामी ने भी।

दादा ने बाबू को गोद से उतारकर धोती ठीक करी और द्वार तक उनके साथ आया।

"जा रे सब मंगल हो जायेगा।"

तानू दादा ने बाबू को आशीर्वाद दिया।

वे चलने लगे।

बाबू ने ऊपर की ओर देखा। काले कुएँ के ऊपर गोलाकार चमकता हुआ आकाश। वहाँ हिलती हुई परछाईयाँ।

"जा रे, जाके सुखी रह।"

लक्ष्मी मामी ने उसको छाती से लगाकर सिर पर चूमा।

उसका शरीर फिर गीला हो गया। हाथों से खेतकर वह पानी के ऊपर आकर लेटा रहा। उसका पेट फूल गया था। ठंड से वह कांपने लगा।

किसी के हाथों में वह धीरे–धीरे पानी के ऊपर उठ रहा था।

कुएँ के ऊपर नीला आकाश बडा बनकर दिखने लगा। फिर उसकी आँखों पर उजाले की किरणें पडी।

"मेरा बेटा....."

उसने माँ की आवाज़ पहचान ली।

वह माँ की बाहों में बेहोश होकर गिर पडा।

जल छाया

रिक्शवाला पप्पू के भविष्य की ओर एक झांक

रिक्शवाला पप्पू के भविष्य की ओर एक झांक

रिक्शावाले पप्पू के चार बच्चे हैं एक लड़का और तीन लड़कियां। पप्पू अपने परिवार के साथ एक झोंपड़ी में रहता है। करींनगर के पास, सोनागंज से दूर।

एक दिन काम से वापस आने के बाद पप्पू अस्वस्थ दिख रहा था।

'क्या हुआ'?

लक्ष्मी ने पूछा।

'तबीयत ठीक नहीं है क्या?'

'मुझसे नहीं होगा'।

'नहीं होगा तो जल्दी आना चाहिए। क्यों इतना कष्ट उठा रहे हो?

कहने के बाद लक्ष्मी को लगा कि ऐसा कहना नहीं चाहिए था। दम तोड़कर काम किए बिना क्या करेंगे? तीन लड़कियां हैं। बड़ी वाली तो जवान हो गयी है।

लक्ष्मी का कहा सुनकर पप्पू के चेहरे पर एक शुष्क हंसी आ गयी, बिल्कुल उसके जैसी। लक्ष्मी को लगा कि वह उसे किसी और की आंखों से देख रहा है।

'आज रिक्शे में सारे के सारे मोटे चढ़े थे। सोनागंज से जो मोटा चढ़ा था वह हाथी जैसा था। नहीं होगा लक्ष्मी, थक गया।'

वह उसको देखकर फिर एक बार हंसने लगा। एक लकीर की तरह शुष्क हंसी। वह हंसी चीनियों के आंखों की याद दिला रही थी। चीनियों के आंख और पप्पू का मुंह एक जैसा था।

उस हंसी की शुष्कता से लक्ष्मी को आसानी से यह पता चला कि उसने जो कहा, वह झूठ है।

'खाना खाके आकर सोजा।'

लक्ष्मी ने कहा।

'भूख नहीं है।' उसने बोला।

लक्ष्मी ने पति को काकदृष्टि से देखा। उसकी मुख पर लेश भी रक्तप्रसाद नहीं है। उसे याद आया कि 'सोनागंज जाने से मर्द लोग भूख–प्यास भूल जाएंगे,' ऐसा कौसल्या ने कहा था। लक्ष्मी ने भी एक बार देखा था। चूड़ियां पहने हाथों को खिड़की से बाहर निकालकर बुला रही थी। लकड़ी की सीढ़ियों में उतर आ कर उपर उठाकर दिखा रही है।

सौ रूपया देने पर भी किसी को लेकर सोनागंज जाने से उसने पति को मना किया था

उसने अपने मर्द को एक बार नफरत से देखा।

कांसे के बर्तन में पका हुआ चना और चावल था। उसने बर्तन को ढ़क दिया। बड़ी लड़की दीवार से चिपककर सो रही थी। रसोई, बैठने का कमरा, सोने का कमरा सब एक ही है। वहां सरसों के तेल की गंध जम गयी थी। साथ ही साथ कांसे की गर्मी भी। दिनभर धूप में उबलने वाली कांस, रात होने पर गरम होने लगेगी। लक्ष्मी यहां–वहां पड़े बच्चों के पास जाकर लेटी।

पप्पू बाहर बैठकर बीड़ी पीने लगा। आधी रात होने पर भी वह अंदर नहीं गया। करींनगर सिनेमा से 'नाइट शो' के बाद वापस आने वाले लोग उसके सामने से शोर मचाते हुए चले गये। बीड़ी पूरी पीने के बाद वह धीरे से अंदर आया।

'सो गयी क्या?'

पप्पू ने लक्ष्मी के कंधे पर हाथ रखा। चोली का कंधा फट गया था। बिना फटी चोली पहनते उसे कभी देखा नहीं।

उसके हाथों में लोहे का गंध था। रिक्शा की पकड़ी का ठंडी गंध।

'नींद नहीं आ रही है।'

पप्पू ने कहा।

उसके बालों में भी सरसों के तेल की गंध थी। वह दुबली थी। उसकी हंसी की तरह। चीनियों के आंखों की तरह। रूसवालों के कम्यूनिसम की तरह।

'सरकार रिक्शा का विरोध करने जा रहे हैं'।

उसने गला ठीक करके उसकी ओर देखा। पति ने जो कहा वह उसकी समझ में नहीं आया। लक्ष्मी तो अनपढ़ है।

'शहर में रिक्शा पर निरोध लगाने जा रहे हैं।'

फिर भी उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

'निरोध' शब्द सुनकर उसको लगा कि यह परिवार–कल्याण से संबंधित कुछ है।

बच्चों को सिखाने की तरह उसे साफ–साफ बताने लगा। एक ज़माने में यह शहर राजसी हुआ करता था। आज यह स्थान कूड़ों का ढेर हो गया है। यातायात के जाल के कारण सड़कों पर दुर्घटनाएं हो रही हैं। नगर को

शुद्ध बनाने के परिश्रम का पहला कदम है एक मार्च से लागू करने वाले 'रिक्शाओं का निरोध'।

'हे भगवान मेरे बच्चे तो भूखे रह जाएंगे....'

लक्ष्मी उठकर बैठ गयी। झोंपड़ी के अंधेरे में उसका चेहरा और पीला पड़ गया।

गली और परिसर निश्शब्द था, फिर भी पप्पू की झोंपड़ी से सिसकियां उठने लगीं।

'रो मत।' पप्पू ने सांत्वना दिलाई।

'जिस भगवान ने मुंह दिया है वह अन्न भी देगा।'

लेकिन मन ही मन वह भी बोलने लगा।

'मेरे को कुछ रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है भगवान। मेरे बच्चे भूखे तो नहीं रह जाएंगे न?।'

पप्पू सिर पकड़कर बैठा रहा। बीड़ी के धीमे धुएं से उसके गले में दर्द होने लगा। उसकी गरम सांसों में जली हुई लकड़ी की गंध थी। पप्पू और लक्ष्मी को उस रात नींद नहीं आयी। आगे की रातों की नींद भी उनसे छीन ली गयी थी।

सुबह के समय करींनगर गली से वल्लभभाई पटेल मार्ग में आए हुए बच्चों के हाथों में प्ले कार्ड था। यूनिफार्म पहने हुए लड़के–लड़कियां गले में एक हरा रूमाल बांध दिया था। बच्चे जोर से गायेः

'हमारा शहर मर रहा है।

हम साथ मिलकर उसे बचाएं।

मैं अपने शहर से प्यार करता हूं।

पप्पू को पता है कि गले में जो हरा रूमाल है वह उन बच्चों के युनिफार्म का भाग नहीं है। रोज वह बच्चों को रिक्शे में बिठाकर ले जाया करता है न ? हाथ का प्लेकार्ड और गले का हरा रूमाल... स्कूल में आज कुछ न कुछ विशेष जरूर है, पप्पू सोचने लगा। वह झोंपड़ी के सामने बैठकर हुक्का पीने लगा।

पप्पू के बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। उसके बारे में किसी ने कुछ पूछा तो उसको गुस्सा आ जाएगा।

'रिक्शा वाले के बच्चों को पढ़ाई क्यों?'

बुढ़ापे में थक जाने तक रिक्शा चलाना है। एकदम बीमार हो जाने पर अपना काम बेटे को सौंप देना है। इसीलिए भगवान ने तीन लड़कियों के बाद एक लड़का दिया है।

'मुझे भी गले में रूमाल बांधना है।' 'हरा रूमाल'।

लड़का बोलने लगा।

'शैतान इधर आ।' उसकी बड़ी दीदी बुलाने लगी।

'पानी गरम हो गया है। चलो चूतड़ साफ कर देता हूं।'

Jawaharlal Nehru University Library
TH-11547
DISS 491.4380294812 SUBI mu

थोड़ी देर बाद बच्चों का एक और संघ गली से चलकर आया। एस. एच.जी.ई. एम (सर एस.जी. एड्मंड मेमोरियल) में जाने वाले बच्चों ने भी गले में रूमाल बांधा था। वे ऊँची आवाज में गाना गाते हुए गली से चलने लगे।

आवाज़ सुनकर सब लोग बाहर आकर ताकने लगे। वे सब पप्पू की तरह गरीब हैं। वे सब सुभाष नगर वाले तेल–मिल और ईंट–फैक्ट्रियरों में काम करने वाले हैं और उनमें से अधिकतरों के सांसों में पिछले रात की शराब की दुर्गंध थी।

उस दिन पप्पू देर से रिक्शा लेकर सड़क पर उतरा। वह इस तरह हांफने लगा, जैसे कि कोई उंचा पर्वत चढ़ रहा हो। बार–बार पेशाब करने पर भी उसको पेशाब की शंका लगी रही। नाभी में जलन!

हांफ और जलन के बीच उसने देखा कि गलियों में अभी तक नहीं देखे कुछ कुछ इश्तहार लगाए गए हैं। उन इश्तहारों का रंग हरा था।

'हमारा शहर मर रहा है।

हम साथ मिलकर उसे बचाएं।

मैं अपने शहर से प्यार करता हूं।

जलती हुई नभी को उसने हाथ से दबाया। पढ़ना न आते हुए भी इश्तहारों को वह देखता रहा। वहीं इश्तहार बसों के पीछे भी उसने देखा। नाभी में जो जलन हो रही थी वह कलेजे की ओर बढ़ रही थी। एक कोयले की इंजन की तरह उसके अंदर से गरम हवा निकलने लगी।

एक मोटी मराठी औरत को लेकर (कल से उसकी रिक्शा में चढ़ने वाले सब मोटे थे।) विक्टोरिया लेइन से लाल चौक की ओर रिक्शा खींचते समय उसने वहां भीड़ देखी। चौंक में भीड़ साधारण बात है। वहां लालझंडे लहराते रहते हैं। सांतोदत्ता चौक, जो उसका परिचित स्थान है, वहां जब भाषण होते थे, तब सारे के सारे रिक्शावले एकत्रित होकर यातायात को बंद

कर देते थे। आज उसने वहां हरा झंडा देखा। लोगों के बीच एक कूड़े की डिब्बे में चढ़कर एक बूढ़ा जोर से बोल रहा है। उसने गले में एक हरा रूमाल बांधा था। बूढ़ा होकर भी उसकी आवाज में युवकों जैसा दम था।

'बढ़ती हुई आबादी'।

'मोटर गाड़ियों की बढ़ती हुई भीड़ के कारण दम घोंटू गलियां।'

'फैक्ट्रियों से विसर्जित धुंआ।"

'नाली बनने वाली गंगा।'

'हमारा शहर मर रहा है।'

रिक्शा में टिककर धूप खाते हुए पप्पू ने वह भाषण सुनता रहा। भाषण के अंत में युवकों की आवाज वाले वह बूढ़े ने हरे रंग का नोटीस सब में बांटा। अपने शहर को बचाने के लिए एक उत्तरदायित्व वाले नागरिक की तरह हर एक नगर वासी को करने वाले जिम्मेदारियों के बारे में उसमें विस्तार से लिखा था।

अनपढ़ पप्पू ने उस नोटिस को पलटकर देखा और बाद में उसे नाली में फेंक दिया।

उस रात को ए.सी.आर.पी का एक अत्यावश्यक सम्मेलन था। झोंपड़ी के सामने रिक्शा बांधकर करींनगर से सवा बाटिल दारु लेने के बाद ही पप्पू सम्मेलन में भाग लेने गया। बहुत सारे रिक्शावाले वहां सम्मेलन था। चाहे उन सबका नाम अलग हो, पर सब एक जैसे दिख रहे थे।

'दुबला शरीर!'

'धूप से जली हुई चमड़ी।'

'हाथों में निशान।'

'सांसों में बीड़ी और दारु की दुर्गंध।'

ए.सी.आर.पी.ए. का सिक्रेटरी संतोषदत्ता रिक्शावालों को संबोधित करते हुए बोलने लगा। फूला हुआ कलेजा और कसे हुए पेशियों वाले दत्ता के स्वर क्षीणित था।

इस शहर की प्राचीन याद है रिक्शा। बिना रिक्शा के यह शहर कभी नहीं था।

यातायात के जाल के कारण बच्चे ठीक समय पर स्कूल नहीं पहुंच रहे हैं। रोगियों को अस्पताल पहुंचाया नहीं जाता। रोज–रोज की रोड़ दुर्घटना के कारण हमारे भाई–बहन–बच्चे मर रहे हैं।

इसका कारण यातायात में बाधा डालने वाले रिक्शे हैं। इसलिए आगे चलकर इस शहर में रिक्शा नहीं होंगे। एक मार्च से।

बैठे और खड़े रिक्शावालों के बीच एक तनाव छा गया।

सांतोपला ने जारी किया।

'हम बेरोजगार हो जाएंगे।'

'हमारे बच्चे भूखे रह जाएंगे।'

(दारु पीकर उन्मत होकर हुआ एक रिक्शावाला चिल्लाकर बोला : हमारी औरतें सोनागंज जाने लगेगी।)

लेकिन, हमारी प्यारे शहर को जिंदा रखने के लिए हम यह त्याग करेंगे। (शहर को जीवित रखने के लिए)

एक प्राचीन याद।

'शहर को जीवित रखने के लिए।'

पप्पू को कुछ भी समझ में नहीं आया। संतोदत्ता का भाषण समाप्त होने पर हमेशा की तरह रिक्शावालों ने तालियां बचाई। साथ–साथ पप्पू ने भी जोर–जोर से तालियां बजाईं। बच्चों को भूखे रहने दो। औरतों को सोनागंज जाने दो। हम तालियां बजाएंगे।

'मैं अपनी रिक्शा लेकर दरिया में कूदकर खुदकुशी करूंगा।'

पप्पू ने कहा। उसकी दृष्टि ताला लगाई हुई दारु के दुकान तक जाकर निराश होकर वापस आ गयी।

रिक्शावाले एक–एक करके चले गए। पप्पू झोंपड़ी में वापस आकर अपनी पत्नी और बच्चों के पास लेट गया। बिना नींद के लेटे हुए वह हाथों से अपने बच्चों को सहलाता रहा। उसका अंतर मन जल रहा था।

गंगा के पूर्वी तट पर आधे पानी में और आधी तीर पर पड़ी कल्लू की देह मिली। धोबी लोगों ने सबसे पहले वह देखा था। मन में दया–भाव होने के कारण एक धोबी ने उसके शरीर को पानी से जमीन पर खींच लिया। उस समय कल्लू के मुंह से गंगाजल और दारु दोनों एक साथ बाहर आ रहे थे। कुछ दूरी पर पुल की छाया में उसकी रिक्शा अनाथ बनकर खड़ी थी।

पुलिस के आने तक धोबियों और रिक्शावालों ने नदीतट पर कल्लू की देह का पैराहा किया।

सबसे पहले आया या एक गिद्ध ऐसे अवसरों पर पुलिसवालों से होशियार है गिद्ध। गिद्ध ने धोबियों और रिक्शावालों के सिर के उपर चक्कर काटने लगा।

'हमें हड़ताल करनी चाहिए।'

रामगोपाल ने कहा। यह सुनकर एक बूढ़ा रिक्शावाला हंसने लगा।

'रे बुद्धू आगे से रोज के लिए हमारी हड़ताल है न?'

आज से हमेशा के लिए हड़ताल। बिना लाल झंडे के, बिना नारे के हड़ताल।

'कल्लू'[1] की मौत ने रिक्शावालों के बीच की अस्वस्थता को बढ़ाया। म्यूजियन रोड़ से एक मान्य व्यक्ति को लेकर चलने वाले रिक्शावाले ने अचानक रिक्शा रोक दी। रिक्शे में बैठे हुए मान्य–जन को गाली देने लगा और जो भी हाथ में आया, उससे मारने लगा।

एक शिक्षा वाले ने आत्महत्या की।

एक रिक्शावाला पागल बन गया।

एक मार्च से पहले ही यानि की रिक्शा पर निरोध डालने के पहले ही पप्पू ने शिक्षा चलाना छोड़ दिया। वह बीड़ी पीते हुए झोंपड़ी के सामने बैठा रहा। गली से निकलने वाले पहचानवालों से खुशहाल पूछतो और हंसने

---

1 कल्लू : एक रिक्शा वाले का नाम।

लगा। गली से गुजरने वालों से हंसी मजाक करके जोर–जोर से हंसने वाले पाने को देखकर लक्ष्मी ने गरम सिसकियां लीं।

पप्पू ने अपनी रिक्शा को तोलकर बेच डाला। लोहे के दाम पर।

एक मार्च!

नगरवासियों की पौराणिक यादों में दरार डालकर रिक्शा ने नगरवासियों को हमेशा–हमेशा के लिए सलाम किया। इससे मोटर गाड़ियां बिना झंझट से चलने लगीं। शुद्धिकृत गलियों से स्कूल बच्चे मार्च करके चले गए।

'मैं अपने शहर से प्यार करता हूं।'

सड़कों के किनारों पर जमा हुए लोगों ने तालियां बजाई। आत्महत्या करने वाले या पागल बनने वाले रिक्शा वालों के बारे में किसी ने भी सोचा नहीं।

पप्पू और उसका परिवार अपने–अपने भांड़ लेकर गलियों से आगे चलने लगे। साफ और सुथरे शहर में अब उनके लिए जगह नहीं है। इसीलिए गंदगी भरी दूसरे शहर की तलाश में वे आगे बढ़े।

———————

हमारे बच्चे

हमारे बच्चे

कई सालों बाद बहुत दूर एक शादी। शादी वालों के यहां घर जाने के लिए रेलगाड़ी और बसें भी है। शदी वालों के यहां बिलकुल सामने उतरने की सुविधा भी है। लेकिन 'उन्नी'[1] को पहनाने के लिए एक अच्छा कपड़ा भी नहीं है।

कई दिनों बाद ससुराल जाते समय इकलौते बेटे को पहनाने के लिए कपड़ा नहीं है तो क्या करें? 'देच्चू'[2] की विचार धारा दिमाग से उतरकर दिल पर अटक गयी। कष्ट के बारे में सोचते ही उसका दिमाग चालाकी से वह काम दिल को सौंप देता है। लगातार रक्त के दौर से थका हुआ दिल चिंताओं के बोझ भी उठाने को मजबूर हो जाता है।

'क्या करेंगे?'

वह कहने लगी:

'उन्नी क्या पहनकर जियेगा?'

धोती गुठनों के उपर बांधता हुआ बरामदे की सीढ़ियों पर बैठा हुआ 'कुन्नाप्पु'[3] के कोयले जैसे पैरों पर वातरोग का व्रण साफ दिखाई देता है।

---

1 उन्नी : लड़के का नाम।

2 देच्चू : स्त्री पात्र का नाम

3 कुन्नापु : कथा नायक का नाम

उसके बैठने का अंदाज देखकर लगा कि अंगन एक दरिया है और वह एक मछुआरा है।

'देखो कैसे पत्थर की तरह बैठे हो?'

देच्चू ने कहाः

'हे भगवान इस आदमी के साथ जी–जीकर मैं तो थक गयी।'

कुन्नाप्पू ने मुड़कर उसे देखा। गरीबी आने पर मछुआरों के मुख पर जो भाव होता है, वही भाव उसकी चेहरे पर देखा जा सकता था।

'उन्नी को कपड़े बनाने के लिए कब से कह रही हूं। सुना कभी आपने? 'विशु'[4] के समय कहा कि 'ओणम'प[5] आने दो। ओणम आने पर.....

'रास्ता है।'

कुछ देर बाद चिंता से मुक्त होकर कुन्नाप्पू ने एक स्प्रिंग की तरह अपने पतले पैरों पर खड़ा हो गया। उस शोषित आदमी को देखकर ऐसा लगा कि उसके पसली की सारी हड्डियां एक साथ नीचे गिर रहीं हो। हस्ट पुस्ट शरीर था उसका। वातरोग ने उसके पैरों को ही नहीं पूरे शरीर को कोयला बना डाला था।

---

4 केरलवासियों का नव वर्ष, इसे त्यौहर की तरह मानाया जाता है।

5 केरलवासियों का एक त्योहार

उसने तौलिया लेकर कंधे पर रखा। उस तौलिये से बदबू आ रही थी।

'जा कहां रहे हो?'

'उन्नी के लिए एक कपड़ा।'

'पैसा कहां से?'

'रास्ता है।'

धोती को उपर की ओर उठाकर बाड़ा पारकर निकल गया, जैसे कि पानी में चल रहा हो । बरामदे में खड़ी देच्चू ने स्वयं से पूछा कि यह यात्रा किस ओर है!! निकल गये तो कुन्नाप्पू को रोकना किसी के बस की बात नहीं है, यह उसको पता है!!

उन्हीं सीढ़ियों पर बैठती हुई देच्चू ने अपने मन की विचार धाराओं को लेकर आगे बढ़ने लगी। कुन्नाप्पू के छोटे भाई की शादी की खबर मिलने के बाद से उसका मन व्यथित है। गाड़ी और बस के लिए पैसा चाहिए न? कम से कम उन्नी के लिए कपड़ा चाहिए। सोच–सोच कर देच्चू थक गयी।

बीच–बीच में एक दो बार उसके दिल ने विचारों का ढेर दिमाग को सौंपने का प्रयास किया। चालाक दिमाग तो पकड़ से फिसल गया। धोखेबाज दिमाग। दिल को अपना काम करने दो। पैरों में वातरोग आने के बाद से कुन्नाप्पू ने काम करना छोड़ दिया। तब से घर में चूल्हा नहीं जल रहा है।

कषाय लेने की नुस्खा दे दिया तो उसके लिए भी पैसा चाहिए न, इस डर से कुन्नाप्पु ने 'चोक्काई'[6] वैद्य को जाकर मिला भी नहीं।

'अरे, बीमारी हो गयी है तो वैद्य को दिखानी चाहिए। भगवान आकर तुम्हारी बीमारी थोड़े ही ठीक करेगा, ऐसा तू सोचना मत।'

रास्ते में मिलने पर चोक्काई वैद्य ने कुन्नप्पु से कहा था।

'मेरे जेब में अभी कागज–कलम है। अभी चाहें तो अभी दे सकता हूं। नुस्खा। लेकिन मैं ऐसा नहीं करूंगा। तुझे आकर मुझ से मिलना चाहिए। जो भी करना चाहिए, उसे ढंग से करना है। वही है उसकी एक रीति।'

बीड़ी के पत्ते लेकर 'पन्नियन्नूर'[7] की तरफ बस के इंतजार में खड़े एक बूढ़े से किसी बात पर गुस्सा होकर चोक्काई वैद्य आगे निकल गया।

---

6 चोक्काई : वैद्य का नाम

7 पन्नियन्नूर : एक गांव का नाम

कुन्नापु जिन–जिन मुसीबतों का सामना कर रहा था, दूसरी तरफ देच्चू भी उसका सामना कर रही थी। चूल्हा जल नहीं रहा है। यह उसकी परेशानियों में सबसे पहली और बड़ी परेशानी थी।

'तुम्हारा आदमी कहां गया'?

'छोटे बरामदे में बैठा है।'

'आज क्या कुछ बनाओगे नहीं?'

'यह आपको कैसे पता?' देच्चू ने पूछा।

'मेरी औरत ने कहा था।' हमारी आंगन से देखने से तुम्हारी रसोई दिख जाएगी न?'

'कुछ बनाने के लिए कुछ काम भी चाहिए न'?

'काम–वाम क्यों? बस तुझे थोड़ा मन लगाना होगा। 'तुम तो अभी भी जवान हो न।?'

दुकानदार 'चोई'[8] ने उसे एक बार कामुकता से देखा और चला गया, जैसे कि उसे घाव पर नमक छिड़कने से बहुत खुशी मिल गयी हो।

---

[8] दुकानदार का नाम

देच्चू अपने विचारों पर वापस आ गयी। 'उन्नी के बापू के बातरोग ठीक होने के बाद वासु शादी नहीं कर सकता था क्या?

वह सोचने लगी। कभी–कभी यह गरीबी उसका व्यंग्य बोध इतना बढ़ाती है कि पूछो मत। लेकिन आज देर से उठी नर्म भावनाएं उसके मुरझाए ओंठों पर हंसी नहीं ला सकी। उसके बदले उस व्यंग्य ने उसे रोने की सीमा पर लाकर खड़ा कर दिया। गरीबों के लिए व्यंग्य हंसी की नहीं गम की बात है! यह अक्ल देच्चू को कहां?

हंसे या रोयें, फिर भी व्यंग्य तो व्यंग्य है। उसके बाद वह एक और व्यंग्य के बारे में सोचने लगी। उन्नी का बापू इस तरह बिना काम के बैठा रहा तो मैं एक काम ढूंढ लूंगी। पेटी में पड़ी हुई 'नाइलेक्स' साड़ी पहनकर गली से घूमने लगेगी। यह व्यंग्य पहले से भी अच्छी लगी, इसीलिए उसने हंसने की कोशिश की। हंसी तो रोना बनकर बाहर आ गयी। एक प्रकार का सूखा रोना, आंखों में एक बूंद आंसू भी न आया, सूखा रोना.....

इस प्रकार व्यंग्य पर हंसते–हंसते देच्चू ने देखा कि कुन्नाप्पू आ रहा है।

बगल में एक पोटली रखके उत्साहित होकर आने वाले कुन्नाप्पू को देखकर देच्चू हैरान हो गयी। उनके पैरों का वात इतनी जल्दी ठीक हो

गयी क्या? देखके किसी को लगेगा नहीं कि उनके पैरों में वात–व्रण है। उसका रास्ता चोकाई वैद्य के दुकान के सामने से था। कहीं किसी चिकित्सा से वैद्य ने उसकी बीमारी ठीक तो नहीं की? इस प्रकार इतनी जल्दी वात ठीक हो जाएगा क्या? प्राकृतिक चिकित्सा में ऐसी कुछ खास शक्ति है, ऐसा देच्चू ने सुना था। किसी ने बताया भी था कि चोक्काई वैद्य ने किसी रोगी के पेचिश बीमारी को एक पल में ही बंद कर दिया था। कुन्नाप्पू के आंगन में घुसते ही देच्चू ने सबसे पहले उसके पैरों को देखा। किसी ने कुछ अद्‌भुत नहीं किया था। वात–व्रण तो वहीं था। वात रोग पेचिश की तरह एक पल में ठीक होने वाली बीमारी नहीं है। यह बात देच्चू समझ गयी। फिर भी कुन्नाप्पू एकदम स्वस्थ होकर चल रहा था। इस बात पर देच्चू संतुष्ट हो गयी।

'तैयार हो जाओ।'

'कहां?'

'शादी में।'

'लड़के को कपड़ा मिला'?

'लो।'

उसने अपनी बगल में से एक पोटली लेकर जादूगर की तरह उसको खोला। जादू का डिब्बा खोलने से उसमें से फणाधर सांप खड़ा हो जाने की या कबूतर फटफटाकर उपर उठने की संभावना है। बिजली गिरने की रीति भी है। यह सब एक सिनेमा में देच्चू ने देखा था।

उसकी आंखें एकदम छिलमिला गयी, जैसे कि बिजली पड़ी हो। देच्चू को लगा कि वह क्या देख रही है? वासु की शादी की खबर सुनते ही जो देखना चाहा, वही। उन्नी के लिए एक 'कपड़ा'! उसने कपड़े को हाथों में लेकर उलट–पलटकर देखा।

हल्के लाल रंग में छाती पर दांत दिखाकर हंसने वाले एक अंग्रेजी बच्चे का चित्र था। अंग्रेजी में कुछ शब्द भी लिखे थे। जिन्हें वह पढ़ना नहीं जानती थी।

'विदेशी है रे।'

कुन्नाप्पू ने गर्व से कहा। उसके पैरों पर कीचड़ और मिट्टी पड़ा था। बहुत दूर तक चले होंगे। कभी–कभी देच्चू यह शिकायत करती थी कि कुन्नप्पू उसे और उन्नी को ठीक से चाहता नहीं। उसे कभी–कभी शक भी हुआ कि यह पैरों की बीमारी आलस बैठने का बहाना तो नहीं? अब उन शिकायतों के बारे में सोचकर देच्चू कुंठित होने लगी।

'क्या दिया?'

कुन्नाप्पू चुप रहा।

'पचास तो हो गया होगा।

पचास न दिए बिना इस तरह चमकने वाला कहां से मिलेगा? देच्चू फुसफुसाने लगी।

कुन्नापु ने आंगन को फिर से दरिया बना दिया। तेज चलने से पैरों में जो दर्द शुरु हुआ था वह जांघ की ओर बढ़ने लगा। कुन्नाप्पू के लिए सारे के सारे दर्द जांघ से शुरू होते हैं और वहीं खत्म भी हो जाते है। नाभी और माथे पर मनुष्य का मर्म रहता है, ऐसा उसने सुना था। लेकिन अपने अनुभव से कुन्नाप्पू समझ गया था कि उसका मर्म जांघ में है।

'क्या दिया आपने?'

देच्चूने फिर से पूछा।

'कुछ नहीं।'

'उधार लिया क्या'?

'न।'

'तो फिर चोरी की होगी।'

देच्चू को गुस्सा आने लगा।

कुन्नापू को देच्चू के चेहरे पर एक थप्पड़ देने का क्रोध आया।

धूप में दर्दीले पैरों को लेकर इतनी दूर से कमीज लेकर आया और हाथ की दूरी पर खड़ी होती तो उसका चेहरा घुमा दिया होता। लेकिन दोनों हाथों की लंबाई से भी दूर खड़ी थी देच्चू।

'पसंद नहीं है तो बोलना मत, मैं तो गैर हूं न?'

'साथ सोने वाली तू कैसे गैर होगी, नालायक?'

'तो फिर बता, कहां से मिला यह सुन्दर कपड़ा?'

'छोटे मामू दा के यहां से।'

छोटे मामू दा के सब रिश्तेदार विदेश में हैं।

'वापस देना नहीं है क्या।?' देच्चू ने पूछा।

''नहीं''

'कुन्नाप्पू, यह हमारी तरफ से तेरे बेटे को।' 'ऐसा कहा था मामूदा।'

देच्चू कमीज लेकर चूमने, सूंधने और सहलाने लगी। एक मिनट के लिए उसको लगा कि यदि वह बच्ची होती तो यह पहन पाती। उन्नी पर यह सब जचेगा। यह कमीज पहनकर शादी में जाने पर सब की नजर मेरे बेटे पर पड़ेगी। जाने के पहले आरती उतारना है, उसने सोच रखा।

चढ़ाई पर लपेटकर सोने वाले उन्नी को चुटकी से उठाकर, धान पत्ते से भूसा लेकर उसका दांत साफ करा दिया। कुन्नाप्पू की तरह पान और बीड़ी खाकर खराब नहीं हुए थे उसके दांत। उसको कुंए के पास ले जाकर नहला दिया। तब तक उसका मन शादी से भर गया था। एक शादी में जाकर कितने साल बीत गए। कब जाकर अंत आएगा मेरी इस गरीबी और कष्ट का, वह व्यथित होने लगी।

अब ऐसी वैसी बातें सोचना नहीं। उसने तय किया। सवा बजे की रेलगाड़ी पकड़ने के लिए स्टेशन पहुंचना है। यदि वह गाड़ी मिली तो धूप ढलने से पहले शादी वाले के यहां पहुंच जाएंगे।

कुन्नाप्पू नहाकर 'मल्ल'[9] की धोती और कमीज पहनकर बरामदे में तैयार होकर बैठा है। पैरों का ब्रण सफेद कपड़ों से ठीक से बांध लिया है।

---

9 मल्लः खास प्रकार की कपड़ा इसको हाथों से बुने जा सकता है। महात्मा गांधी इसी का उपयोग करते थे।

उसके शरीर को देखे बिना मात्र पैरों को देखें तो लगेगा कि कोई कुष्ठ रोगी बैठा है। देच्चू ने उसको याद दिलाया कि धोती सीधी करके, चलना है। लेकिन देच्चू को पता है कि इससे कोई फायदा नहीं है। बाहर निकलते ही वह धोती को गुठनों के उपर बांध लेंगे, जैसा कि पानी में चल रहा हो। कुन्नापू के लिए आंगन हमेशा दरिया है। सड़कों पर बारिश न हो, तब भी उसके लिए बारिश है। कुन्नापू के लिए सारी दुनिया पानी ही पानी है।

'जल्दी पीलो कंजी, गाड़ी निकल जाएगी।'

'हम कहां जा रहे हैं?' उन्नी ने पूछा।

'वासू चाचा की शादी में।'

'क्या हम रेल गाड़ी में जाएंगे?'

'हां।'

'बस में भी जाना है क्या?'

'गाड़ी, बस दोनों में।' देच्चू ने उत्तर दिया।

झुकाम से सावधान रहने के लिए देच्चू ने उन्नी की मूर्धा पर काली मिर्च का पाउडर लगा दिया। थाली में कंजी वैसा का वैसा पड़ा है। वह उसके पास बैठकर जल्दी–जल्दी उसे खिलाने लगी।

रेलगाड़ी का सपना देखकर उन्नी ने कंजी पी लिया।

'रेलगाड़ी कैसे चलेगी'?

'अपने बापू से पूछ।'

रेलगाड़ी जिंदा है क्या?

'चुपचाप कंजी पी ले शैतान।'

उन्नी को कपड़ा पहनाकर, देच्चू को स्वयं तैयार होना है। कल ही नींबू के नीर से कपड़े को गीला करके उसे जलाकर राख को आईने में बटोरकर काजल बनाकर रखा था। बर्तन में कोयला डालकर साड़ी और ब्लाउज को इस्तिरी करके रखा था।

'रे उन्नी यह देख, तेरे बापू क्या लाए हैं?

देच्चू ने चमकने वाली कमीज उठाकर दिखाया। वह ऐसा बोलने लगी जैसे कि कुन्नाप्पू विदेश से ले आया हो।

'विदेशी है, सुन रहे हो रे, जल्दी कपड़ा पहन। गाड़ी आने के पहले स्टेशन पहुंचना है।'

रेलवे स्टेशन एक मील दूर है। ऐसा लगा रहा है कि बारिश हो जाएगी। आकाश काला हो गया है, इस बात पर अब तक उसने ध्यान नहीं

दिया था। बारिश आ जाएं तो खेत वाला छोटा रास्ता नहीं ले पाएंगे। बैलगाड़ी जाने वाली मिट्टी का रास्ता लेने पर चलने की दूरी दुगुना हो जाएगा।

साड़ी पहनकर, काजल लगाकर देच्चू आकर कुन्नाप्पू के पास खड़ी हो गयी। चेहरे पर लगाने के लिए पाउडर या माथे पर चिपकाने के लिए बिंदी नहीं थी। कल काजल बनाया, इसलिए आंखें काला बना सकी। कुन्नाप्पू ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। कांटे पर मछली लगाने पर मछुआरे के चेहरे पर देखने लायक खुशी उसकी चेहरे पर था। लेकिन यह खुशी अपनी औरत का सौंदर्य देखकर नहीं बल्कि शादी के दावत का विचार आने से है, यह कुन्नाप्पू का अपना रहस्य है। अतिमोह न होने के कारण देच्चू को निराशा नहीं आयी। किसको दिखाने के लिए काजल लगाउं? अपने मर्द को इन सब में कोई दिलचस्पी नहीं है, यह देच्चू को अच्छी तरह से पता है।

निकर और कमीज पहनकर उन्नी भी तैयार होकर आ गया।

'क्या रे, यह पहनकर तू शादी में जाएगा?'

उन्नी ने अपने छोटे एवं पुराने कमीज को लंबा बनाने की प्रयास में उसको नीचे की ओर खींचने लगा। देच्चू अंदर गयी और नया कमीज लेकर

उन्नी का छोटा कमीज उतारने लगी। अचानक उन्नी उसकी हाथों से निकलकर भाग गया तो देच्चू को गुस्सा आ गया।

'मुझे मेरा वाला कपड़ा ही चाहिए।' उन्नी बोलने लगा।

'देख उन्नी जिद्द मत कर।'

देच्चू ने उपर की ओर देखा। ऐसा लग रहा था कि अभी पानी बरसेगा। एक भी छाता नहीं है। जो है वह पूरी तरह से फटा हुआ था। इस घर की सारी की सारी चीजें बेकार हैं। वात रोग वाला कुन्नाप्पू की ही तरह....

देच्चू ने उन्नी को पास बुलाया तो वह फिर से विरोध करके दूर जाकर खड़ा हो गया।

कुन्नाप्पू बादलों की छाया लिए हुए आंगन को एकटक देख रहा था। पर्दा उठने के पहले की उत्सुकता!

नाश्ते में जो मिर्च की चटनी और कंजी पीया था उसका तीखापन कलेजे की ओर बढ़ रहा था। वह बरामदे से उठकर उन्नी के पास आया। साफ सुथरी मल्ल की धोती पहनकर वह एक दूसरी शादी करने चला मध्य वयस्क दुल्हा लग रहा था।

'कमीज बदल।' कुन्नाप्पू ने कहा।

'मेरा वाला अच्छा है।' उन्नी फुसफुसाने लगा।

'शैतान यह फारेन है।' कुन्नाप्पू को गुस्सा आने लगा।

उन्नी पीछे हटकर दीवार से टिक गया। कुन्नाप्पू ने उन्नी का फटा हुआ कमीज उतारकर आंगन में फेंक दिया। लेकिन लाख मनाने पर भी छोटे मामू दा के बच्चे का कपड़ा पहनने को उन्नी राजी नहीं हुआ। इतना खुदगर्ज बच्चा नहीं है वह। 'सुबह से शादी पर जाने के लिए बेचैन खड़ा, इसको अब क्या हो गया? देच्चू हैरान हो गयी।

'चलो तुम फोरन न पहनना।'

कुन्नाप्पू ने कहा।

'तो फिर तुम कुछ भी नहीं पहनना।'

कुन्नाप्पू ने उन्नी का निक्कर भी उतार दिया। उन्नी की दृष्टि बाड़े की ओर पड़ी। क्लास में साथ पढ़ने वाली अम्मिणी इसी रास्ते से 'चोयी चाचा' के घर दूध देने जाएगी।

'गाड़ी निकल गयी होगी।'

देच्चू ने कहा।

'अब क्या करें भगवान?'

यह भी सुनने पर कुन्नाप्पू का दिमाग जलने लगा। वह कहीं से एक रस्सी लेकर आ गया।

ठीक समय पर खाना तो नहीं मिल रहा है, फिर भी लड़के में दम है, यह कुन्नाप्पू समझ गया था। कीचड़ में पड़ी मछली की तरह उन्नी घबड़ाने लगा। जांघ का दर्द वह भूल गया था। सर्कस वाले की तरह चारों ओर भागकर उसने अंत में उन्नी को पकड़ ही लिया। तब तक वह हांफने लगा था।

'तुम्हारा घमंड आज मैं ठीक करूंगा।'

नंगे खड़े उन्नी को कुन्नाप्पू ने बरामदे के कंभे पर दोनों हाथ मिलाकर बांध दिया। उसके बाद वह कुए के पास जाकर धुलाई के पत्थर पर बैठ कर बीड़ी पीने लगा। उस समय उसके गंदे दांत ऐसा दिख रहा था कि वह हंस रहा हो। आंगन को दरिया मानने वाले कुन्नाप्पू, अब एक झील का संकल्प करने लगा। उसमें असफल होने पर भी वह हैरान इस बात पर हो गया कि उस काल्पनिक झील से धुंआ उठ रहे थे। इस बीच उसे यह महसूस हुआ कि उसके पेट में भी बहुत कुछ उबल रहा है। तेज धूप उसके पीठ पर प्रहार कर रही थी।

बाड़े के उस ओर अम्मिणी!

'बापू मुझे छोड़ दो।'

उन्नी रोने लगा।

'नया कमीज पहनेगा क्या?'

'नहीं।'

'तो फिर वहीं रह। सारे के सारे गांव वालों को देखने दे।'

बड़ी घाघरा पहनकर अम्मिणी आंगन में घुसी। कुएं के बाद एक और बाड़ा पार करने पर चोयी चाचा का घर है। अम्मिणी ही नहीं चोयी चाचा और परिवार भी इसी रास्ते से गुजरते हैं।

दोनों हाथों को बांध दिया था, इसलिए उन्नी का गुठनों पर बैठने का प्रयास भी असफल हो गया। निस्सहाय एवं संकुचित उन्नी को देखकर अम्मिणी स्तब्ध रह गयी। वह तुरंत सिर झुकाकर आंगन पार करके बाड़े की ओर चली गयी।

'आगे से मैं स्कूल नहीं जाउंगा।' उन्नी ने कहा।

'कभी नहीं जाउंगा।'

———————

देहात

देहात

गंगाधर की विदेश यात्रा के बारे में सुनकर 'नानू नायर'[1] अपनी लकड़ी की सहायता से चलकर उससे मिलने गया। देखने वाले शंकित रह जाएंगे कि लकड़ी उसको चला रही है या वह लकड़ी को। नानू नायर अचानक बूढ़ा बन गया था। लकड़ी की सहायता से चलने की उम्र नहीं है उसकी। गांववाले इस अकाल वार्धक्य के लिए बेटी प्रेमा को दोषी ठहरा रहे हैं।

गंगाधर को लगा था कि नानू नायर उससे मिलने आयेगा। इसलिए उसको देखकर गंगाधर हैरान नहीं हुआ। वह आंगन में उतरकर नानू नायर का हाथ पकड़कर बरामदे में ले आया, और कुर्सी पर बिठाया।

लकड़ी को कहां रखेंगे यह सोचकर नानू नायर ने चारों ओर देखा। अभी तक जो लकड़ी सहारा था, वह एक मिनट के अंदर बोझ सा लगा। यह समझकर गंगाधर ने लकड़ी लेकर चबूतरे पर रखी और स्वयं वहीं पर बैठ गया।

'नानू नायर कहां से?'

'घर से।'

---

1 नानू नायर – कथा पात्र का नाम

'इस धूप में। एक बार फोन किया होता तो मैं वहां आ जाता।'

कहने के बाद गंगाधर को लगा कि उसने बेवकूफी की बात की। नानू नायर के घर में या घर के आस–पास कहीं फोन नहीं है। इस गांव में फोन वाले घर बहुत कम है। नानू नायर के घर का सबसे निकट वाला फोन गंगाधर के घर में है। यानि कि गंगाधर को फोन करने के लिए गंगाधर के घर में ही आना पड़ेगा।

बाहर किसी की आवाज सुनकर गंगाधर की पत्नी लता नैटी पहनकर दरवाजे पर आ गयी।

'पीने के लिए कुछ ले लूं?' 'हार्लिक्स लेंगे आप?'

उसने पूछा।

'थोड़ा–सा 'कांजी का पानी'[2] मिलें तो काफी है।'

'उसके लिए अभी तक चावल नहीं उबला है।'

'तो फिर कुछ नहीं चाहिए, रहने दो।'

---

[2] कांजी का पानी : चावल को उबाला हुआ पानी। केरलीयों के बीच इस पानी को पीने का आदत है।

धूप से चलकर आने के कारण उसे बड़ी प्यास लग रही थी। लेकिन, उस समय उसकी अपनी गले की प्यास बड़ी बात नहीं थी। क्योंकि उससे भी बड़ी प्यास से मन भर गया था। बैठने के बावजूद भी उस वक्त उसे अपनी लकड़ी की सहायता की जरूरत लगने लगीं।

नानू नायर कुछ बात कहने की कोशिश कर रहा था। दो बार उसने गला खिचखिचाया, लेकिन एक भी शब्द बाहर नहीं निकला। नानू नायर का वैषम्य देखकर गंगाधर अस्वस्थ हो गया। वह चबूतरे से उठकर बरामदे में इधर–उधर चलने लगे।

'पता ले आये हो?'

'हां।'

पसीने से गीले हुए कपड़े की जेब से एक सड़ा हुआ कागज बाहर निकाल दिया। उस पर गंगाधर ने एक बार नजर मार दी। यह पता और फोन नं. सही होगा क्या? उसको शंका हुई। यदि सही होगा तो भी उस अनजान विदेश राज्य में 'आलबी'[3] को कैसे ढूंढ पायेगा? लेकिन अपनी आशंकाओं को उसने बाहर आने नहीं दिया।

'मुझसे जो भी होगा, सब करूंगा।'

---

[3] आलबी – कथापात्र का नाम

गंगाधर ने नानूनायर को आश्वासन दिलाया।

नानूनायर हाथ जोड़कर आगे बढ़ा। जैसा कि गंगाधर के पैर पड़ने जा रहा हो।

वापस जाने के लिए कुर्सी से उठते समय नानूनायर को गंगाधर की सहायता की जरूरत पड़ी।

लकड़ी की सहायता से चले जाने वाले नानू नायर को देखकर गंगाधर ने एक लंबी सांस ली। नजरों से दूर हो जाने में नानू नायर ने बहुत समय लगाया। बीच–बीच में रूक–रूककर विश्राम कर–करके उसने अपनी यात्रा जारी रखी।

ज्यादा दारु पीकर उलटी किया गया एक रात की तरह नानू नायर का वह रूप गंगाधर के मन में रहा।

———————

बलवाटी में पढ़ाने वाली बेटी की तन्ख्वा और थोड़ी बहुत खोती करके नानू नायर का जीवन खुशी से गुज़र रहा था। एक क्षण में, एक बार पलकें मूंद लेने के समय के बीच उसकी सारी संतुष्टि नष्ट हो गयी। उस आलबी के कारण.....

आलबी ने 3 अक्टूबर 1988 को पहली बार उस देहात पर कदम रखा था। स्कूल के बच्चों के साथ नेहे पर आकर वह उस तट पर उतरा। दरिया से आने वाली ठंडी हवा में उसके स्वर्णिम बाल उड़ने लगे। सफेद आंखों से चारों ओर उसने अद्‌भुत एवं आह्लाद के साथ देखा। मीलों लंबी दरिया और भरी हुई खेतें उसके लिए देखने की चीजें थीं। स्कूली बच्चों के साथ वह खेतों में टहलता रहा। फिसलते हुए मेंडों पर चलना आसान नहीं था। उस पर चलने की उसकी कोशिश देखकर बच्चे हंसने लगे। उनके साथ वह भी हंसने लगा। उसको दिखाने के लिए बच्चे अपनी भारी किताबों की थैली लेकर तेजी से उन मेंडों पर चलकर दिखाने लगे। उसके कंधे पर भी एक भारी 'बैग' था। उस पर हवाई जहाजों के नाम वाले 'टैग' था। खिलखिलाकर दौड़ने वाले बच्चों के साथ वह भी दौड़ने लगा। पैर फिसलकर वह पानी में गिरने वाले थे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कुछ ही मिनटों में फिसलने वाले मेंडों में दौड़ना वह सीख गया।

खेत खत्म होते ही सारे बच्चे अपनी–अपनी राह पर चलने लगे और वह अकेला पड़ गया। नीली आंखों में विस्मय भाव लेकर वह अकेला आदमी उस देहात का आस्वादन करने लगा। संध्या हो जाने पर पंजायत ऑफिस के सामने वाली दुकान से एक केला और सोड़ा ले लिया। अनजान देहात है, रात होने वाली है और सोने के लिए जगह नहीं है, ऐसी कोई चिंता उसको नहीं थी। कुछ और आगे चलकर पास वाले ग्रामीण ग्रंथालय की

बरामदे में जाकर बैठ गया। सड़क सुनसान थी। कभी–कभार एक कार या लॉरी गुजर रही थी।

कंधे पर पड़ी थैले से 'स्लीपिंग बैग' बाहर निकालकर उसको जमीन पर बिछा दिया। मच्छर को दूर करने वाली दवाई पूरी देह पर लगाकर आराम से लेट गया। 'स्ट्रीट लाइट' काम नहीं कर रहा था, इसलिए वहां अंधेरा था। कभी–कभी आने वाले वाहनों की रोशनी एक मिनट उस पर पड़कर निकल जाती। आधी रात को जब बारिश होने लगी तो वह उठकर स्लीपिंग बैग के अंदर घुसकर आराम से सोने लगा।

कई दिनों तक अलग–अलग जगह पर उस 'स्लीपिंग बैग' को लोगों ने देखा।

'अच्छे खानदान से है। इसमें शक नहीं। कितना कुलीन चेहरा है।'

नानू नायर ने कहा।

'सागर पार कर हमारे गांव आया है न? उसे ऐसे सड़कों पर छोड़ना हमें शोभा देता है क्या?

'चात्तू'[4] मास्टर ने अपनी राय व्यक्त की।

चात्तू मास्टर – मास्टर जी का नाम है चात्तू

'मेरा बखार तो खाली पड़ा है। रात होने पर वहां आये तो मुझे कोई ऐतराज नहीं है।'

नानू नायर ने कहा।

उस शाम को चात्तू मास्टर और नानू नायर दोनों मिलकर आलबी को लेकर बखार में ले आये। प्रेमा की मां के हाथ से बनी चावल, पका हुआ दही मिलाकर वह खाने लगा। बखार में बिजली नहीं थी। आधी रात बीतने के बाद भी रांतल की रोशनी में वह कुछ पढ़ रहा था, अपनी कमरे की खिड़की से प्रेमा यह देख सकती थी।

सुबह होने पर नहाकर गीले बालों में तुलसी के पत्ते रखकर छाता लेकर बालवाटी की ओर जाने वाली राधा को वह विस्मय के साथ देखने लगा।

'यह क्या बदतमीजी कर रहे हो आप। कुछ न सही, घर में एक जवान लड़की है न, कम से कम यह तो सोचना चाहिए आप को। उसे देखकर ईसा जैसा तो लगेगा ज़रूर। फिर भी इन पर विश्वास नहीं करना चाहिए। नशे की दवाइयों का धंधा होगा। किसको पता!

'अच्चू मालिक'[5], नानू नायर के उपर गुस्सा होने लगे।

यह सुनकर पंजायन प्रसिडेंट चात्तू मास्टर ने कहा।

---

[5] अच्चू मालिक – कथा पात्र का नाम।

'एक विदेशी हमारे गांव में आने से क्या यह गांव बरबाद हो जाएगा? हमारे देश के लोग सारी दुनिया में जाकर रह रहे हैं। उससे वह सारे का सारा देश बरबाद हो गया है क्या? उस 'साईव बच्चे'[6] को नानू नायर की बखेर से बाहर निकालने के लिए आप बोल रहे हैं। इस गांव से भगाने की मांग कर रहे हैं आप। विदेशों में रहने वाले मलयालियों के साथ वहां के लोग ऐसा व्यवहार करें तो क्या हो जाएगा, ऐसा कभी आपने सोचा है क्या? हम सारी दुनिया में जा के रह सकते हैं। सिंगापुर जा सकते हैं, दुबई जा सके हैं, अमरीका जा सकते हैं, कहीं भी जा सकते हैं। कहीं एक विदेशी हमारे यहां आ गया तो हमसे सहा नहीं जाएगा। दुनिया बदल रही है। तकनीकी विद्या और विज्ञान, जीवन बदल रहा है। आगे चलकर ऐसा होगा कि अमरीकी और भारतीयों के बीच कोई भी भिन्नता नहीं होगी। देशों के बीच की सीमाएं मिट जाएंगी। एक ही राज्य होगा 'भूमि'। एक ही मत होगा, 'मानुष जाति'।

'हट' अच्चू मालिक ने कहा। तुम लोगों का वेदांत सुनने के लिए मेरे पास समय नहीं है। संध्या होने के पहले सूखे नारियल को 'वटकरा'[7] पहुंचाना है।

---

6 साईव बच्चे – अंग्रेजी जनता को 'साईव' बुलाने का आदत केरल मैं है।

7 वटकरा – एक गांव (बाजार) का नाम है।

उसके बाद नानू नायर को देखकर कहा 'जल्द से जल्द उस विदेशी को बखार से निकाल दो। नहीं तो तुम्हें पछताना पड़ेगा।'

एक वश की ओर धोती उठाकर 'हवाई चप्पल' से आवाज लगाकर अच्चू मालीक जल्दी से निकल पड़ा।

'अब मैं क्या करूं मास्टर्जी? मुझे चक्कर आ रहा है।'

आपको कुछ नहीं करना है। कुछ ही दिनों में वह विदेशी लड़का खुद वहां से चला जाएगा। तब तक उसे वहीं रहने दो। वह किसी का भी बुरा नहीं करेगा।

'बहुत सीधा है।' नानू नायर ने कहा।

'विदेशियों से हमें भी तालूकात रखना चाहिए। इस दरिया के आगे कोई दुनिया नहीं, ऐसे विचार वाले हैं, अच्चू मालिक के वर्गा। उन लोगों के सोचने का अंदाज बदलना चाहिए। हम लोग जैसे विदेश जा रहे हैं, उसी तरह विदेशियों को हमारे देश में भी आने दो।'

'जितना चाहे वह विदेशी लड़का मेरे बखार में रह सकता है।'

'नानू नायर ने घोषणा की।'

आलबी ने किसी को भी परेशान नहीं किया। दोपहर तक सोता रहेगा। उठने के तुरंत बाद एक 'काली कॉफी' चाहिए। पहले तो वह नानू नायर ही दे आते थे। आज कल प्रेमा और मां में से कोई जाकर दे आती हैं। दरिया में नहाने के बाद कहीं चला जाएगा। हमेशा एक फटा हुआ पैजामा और झुर्रियां पड़ा कुर्ता पहनता है। रोज क्षौर करने की आदत नहीं है। फिर भी देखने से लगेगा कि कोई देव कुमार है। खाना उसके लिए एक प्रश्न नहीं है। एक सोड़ा और एक केला उस के लिए काफी है। कहीं भी जाएं पर संध्या के पहले वह वापस आ जाएगा। उसके बाद रांतल की रोशनी में पढ़ाई शुरु हो जाएगी, वह सुबह तक जारी रहेगा। अपसर्प कथा, प्रेम कथा एवं यात्रा विवरण से संबंधित किताबों में उसकी रूचि थी। पढ़े हुए किताबों की संख्या बढ़ने लगी।

एक दिन प्रेमा 'निरमाला की पूजा'[8] करने के लिए मंदिर गयी थी, तब आलबी को मंदिर में देखकर वह चौंक गयी।

'अब तो वह मंदिर में भी घुस गया। 'गुरुवायुरप्पन'[9] से उसका खेल अच्छा नहीं है। उससे बोलना कि यह ठीक नहीं है, यह खेल यहीं खत्म करना उसके लिए अच्छा होगा।'

---

8 निरमाला की पूजा – मंदिर में की जाने वाली एक खास प्रकार की पूजा।

9 गुरुवायूरप्पन – विष्णु के अवतार 'कृष्ण भगवान' को गुरूवायुरप्पन की संज्ञा दी गई है।

रास्त में नानूनायर से मिलने पर अच्चू मालिक ने गुस्सा किया। नानू नायर विषण्ण हो गया। पूरा गांव उसे दोषी ठहरा रहा है। वे लोग अपवाद का प्रचार करने लगे हैं। बस एक चात्तू मास्टर का सहारा है।

'भगवान की कोई जाती या मत है क्या चात्तू मालिक? चात्तू मास्टर ने पूछा।

'एक विदेशी लड़का मंदिर गया तो भगवान कुपित तो नहीं हो जाएगा। भगवान का हृदय हमारे जैसा छोटा तो नहीं है।' चात्तू मास्टर ने कहा।

'हिन्दुओं के लिए मंदिर, मुसलमानों के लिए मस्जिद और ईसाइयों के लिए गिरजाघर। यही है दुनिया का रिवाज़।' अच्चू मालिन ने कहा।

'तो फिर इन सब में न पड़ने वालों का क्या? वे लोग कहां जाकर प्रार्थना करेंगे।?' चात्तू मास्टर ने पूछा।

'उन्हें प्रार्थना नहीं करना चाहिए। मुझे तुम लोगों का वेदांत नहीं सुनना चाहिए। मैं जा रहा हूं। संध्या होने के पहले ओरकाटेरी[10] मार्किट पहुंचना है।'

मालिक लंगड़ाकर चलने लगा। अरशस की तकलीफ उसे सताने लगी हैं।

---

[10] ओरकाटेरी – वटकरा के पास वाला एक गांव।

नानू नायर का मन अस्वस्थ हो गया। किसी को भी परेशान न करने वाले अलबी से उसको कोई शिकायत नहीं है। लेकिन गांव वाले हमेशा उस पर उंगलियां उठाने लगे हैं। उनसे डरकर नानूनायर बाहर निकलने से हिचकने लगा। रास्ते में कहीं मिल गया तो अच्चू मालिक उसे शत्रु की तरह देखने लगेगा।

ऐसे कुछ दिन बीत गए। मंदिर में उत्सव शुरू हो गया। इसी कारण सारे जगह पर रोशनी आ गया। भगवान से मिलने के लिए भक्तों की भीड़ से मंदिर का आंगन भर गया। गली भर में हाथी का विसर्ज्य पड़ा रहा। पूरी रात रास्तों में दीपशिखा की रोशनी जलती रही। प्रभात होने तक 'कथकली'[11] होते रही थी। ऐसे ही एक दिन प्रेमा की मां ऐसी खड़ी थी कि जैसे कि आग लगी हो....

'एक चिट्ठी छोड़कर प्रेमा आलबी के साथ भाग गयी।'

बस एक दिन से नानू नायर की उम्र दस साल बढ़ गयी। एक दम से आंखों की रोशनी कम हो गयी। पैर जमीन पर पड़ते ही असहनीय दर्द। मुर्चा गया स्प्रिंग की तरह रीढ़ की हड्डी में एक दबाव।

एक दिन नानूनायर के नाम पर एक चिट्ठी आ गयी। लिफाफा खोलते समय उसके हाथ कांप रहे थे। वह प्रेमा की चिट्ठी थी।

---

[11] कथकली – केरल का एक प्राचीन कला रूप आज यह कला रूप विश्व प्रसिद्ध हो गया है।

'प्रिय बापू और मां के नाम...।'

'मैं और आलबी एक दूसरे से प्यार करते हैं। हम सुखवास स्थानों के दर्शन कर रहे हैं। एक महीने के बाद आलबी की 'विसा' खत्म हो जाएगी। आलबी के साथ मैं भी जाउंगी मां और बापूजी मेरी गलतियों को क्षमा कर मुझे आशीर्वाद दे दीजिएगा।.....

गोपालपुर आज सी नामक जगह से उसने वह खत लिखा था। एक पुरानी भूपट देखकर गंगाधर ने नानूनायर को वह जगह दिखा दिया था।

नष्ट हो रहे प्राचीन कला रूपों पर एक सेमिनार प्रस्तुत करने के लिए गंगाधर विदेश जा रहे थे। उनका प्रबंध 'कूटियाटम'[12] पर था दुनिया से सबसे प्राचीन वह नाटक रूप धीरे–धीरे नष्ट हो रहा है। सेमिनार में भाग लेने के लिए मिले इस अवसर का फायदा उठाकर 'कूटियाटम' की संरक्षण करने के लिए एक विदेशी समिति का रूपायन उसके मन में था।ऐसी एक संस्था के लिए यूनेस्को की सहाय हस्त उसे पहले मिल चुकी थी। यात्रा की

---

[12] प्रस्तुत नाटक रूप को दुनिया का सबसे पुराना नाटक रूप माना जाता है। इसका जन्मस्थान केरल के देहात है। आज भी उत्सवों के संदर्भ में यह नाटक रूप मंदिरों में खेला जाता है। कुंजन नंब्यार को इस कला रूप का महागुरु माना जाता है।

सारी खर्चा 'इंडियन काउनसिल फार कलचरल रिलेशंस' कर रहे हैं। अपने प्रबंध को लिखकर पूरा करने के बाद उसे 'वेर्ड प्रोसेसर' में लगाकर 'फोर्माट' करके 'कॉपियां' लेने के लिए 'टाउन' गया। दो दिन बाद 'वीसा' बनाने के लिए मुंबई भी चले गये। उसका फ्लाईट वहां से थी। उसको जाते देखकर गेट पर खड़ी होकर लता ने आंखें पोंछ लीं।

जैसा उसने सोचा था उससे भी अच्छी तरह सेमिनार का अवतरण हो गया। 'कूटियाटम' को संरक्षित करने के लिए चारों ओर से निर्लोभ रूप से सहायता मिलने लगीं। 'कूडियाटम' को पूरी तरह 'सीडी रोम' में आविष्कृत करने के लिए सारे के सारे तकनीकी सहायतायें देने के लिए 'म्यूनिक' की एक कंप्यूटर कंपनी तैयार हो गयी। 'कूटियाटम कलाकारों' की एक विदेशी यात्रा की आवश्यकता के लिए जितने टिकटों की (यूरोप यात्रा के लिए) जरूरत पड़ेगी, वह सब एक स्वकार्य कंपनी ने दे दिया। इस प्रकार पूरी तरह संतृप्त होकर गंगाधर 'ट्रान्स यूरो एक्सप्रेस' में चढ़कर 'कले' आ गये थे।

'कले' से 'डोवर' तक समुद्री जहाज पर यात्रा करने का फेसला गंगाधर ने जानबूझकर लिया था। 'इंग्लीश चैनल' से प्रभात की बेला में 'वाइट क्लीफ' देखने की आशा उसके अंदर के कवि रोक नहीं सकी। शुक्रवार होने के कारण उस जहाज में यात्रियों की भीड़ थी। जो छुट्टियों

को उल्लास भरित बनाने के लिए इंग्लैंड जा रहा है। जहाज का निचला तल उन लोगों की गाड़ियों से भरी पड़ीं थी। रात भर वे लोग गाना गाकर नाचते रहे। उनके द्वारा फेंके गये 'बीयर की बोत्तिलों' और 'विस्की की शीशियों' से समुद्र भर गय! समुद्र का आस्वादन करने के बीच अचानक उसके मन में नानूनायर और बेटी का चेहरा आ गया।

सूर्योदय होते ही जहाज 'डोवर' पर खड़ा हो गया। कविताओं एवं गानों द्वारा परिचित 'वाइट क्लीफ' प्रभात का गीलापन और सूरज की नरम किरणों की नमी दोनों से एक साथ आश्लेषित करते हुए उसके सामने दिखाई पड़ा। लंगर लगाते ही उन्मत्त यात्री अपने–अपने गाड़ियों को लेकर चली गयीं। उन लोगों का जैसा आवेश और आह्लाद गंगाधर में देखने को नहीं मिला। उसके मन में उस वक्त आंसुओं से गीला होकर सूखा हुआ प्रेमा का मुख और नानू नायर का ढेड़ी कमर और वह सहारे की लकड़ी थी।

'आमस्टरडाम एयरपोर्ट' से गंगाधर ने आलबी को फोन किया था। आलबी ने शनिवार को मिलने का वादा किया था और उसके लिए 'ड्रम्मंड स्ट्रीट' का पता भी दिया था।

'डोवर' से गाड़ी पकड़कर वह 'वाटर लू' में उतरी। 'वाटरलू रेलवे स्टेशन' देखकर एक पल के लिए उसे लगा कि कहीं मैं 'तलश्शेरी रेलवे

स्टेशन'[13] में तो नहीं हूं न ? दोनों के बीच इतनी सारी समानताएं थीं कि यह शंका स्वाभाविक थी।

आलबी को फोन पर मिलने को गंगाधर ने महाभाग्य माना। नानू नायर ने जो नम्बर दिया था वह सही नहीं होगा। यदि वह सही निकला फिर भी आबली वहीं होगा इसका कुछ भरोसा नहीं था। सैर करने के आदत वाले है आलबी और उनके देश वासी। आलबी वहां न होते तो उसके पास और कोई रास्ता नहीं था। जेब खाली होती जा रही है। होटल में कमरा लेने एवं यात्रा करने में उसका ज्यादा पैसा खर्च हो गया। उसने बाकि सारे खर्चे पर नियंत्रण रखा। दुनिया भर के चोकलेटों का सस्ता बाजार है 'ऑस्टरडां एयरपोर्ट के ड्यूटी फ्री दुकानें'। लता को चॉकलेट जान से प्यारी भी है। फिर भी उसके कुछ भी लिया नहीं। सेमिनार के संघाटकों द्वारा दिया गया एक–एक डॉलर उसने संम्हालकर खर्च किया, ताकि वह आलबी तक पहुंच पायें।

आलबी ने एक 'पब्ब' का पता दिया था। वहां औरत और मर्द बैठकर और खड़े होकर बड़े–बड़े मगों में 'क्राफ्ट बीयर' पी रहे थे। पब्ब के अंदर ही नहीं बाहर और सड़कों पर बैठकर भी लोग बीयर पी रहे थे।

---

[13] तलश्शेरी – केरल के कन्नुर जिला का एक टाउन, यहां रेलवे स्टेशन भी है।

कार पार्क करके अपनी ओर तेजी से आने वाले आलबी को गंगाधर पहचान नहीं पाया। आलबी ने आह्लाद से उसको 'शेक हैन्ड' दिया।

'सर, कैसा रहा आपका सेमिनार?'

आलबी ने आगे बढ़कर उसको गले लगाया उसके शरीर से किसी किस्म की सुगंध आ रही थी।

आलबी ने बालों को 'क्रोप' करके अच्छी तरह बनाके रखा था। मुख को क्षौर करके साफ किया था। उसने 'कोट' और 'टाई' पहनी हुई थी। उसके हाथों में एक 'लैदर का ब्रीफकैस' भी था।

'एकदम मैं पहचान नहीं पाया।' 'आई एम सौरी' – गंगाधर ने कहा।

'आपके देश के जैसे यहां घूम नहीं सकते। पुलिस वाले पकड़कर ले जाएंगे।

आलवी जोर से हंसने लगा।

वह गंगाधर को एक कम भीड़ वाले जगह पर ले गया। वहां के बार टेंडर और बहुत सारे लोगों के अलाबी परिचित था। वह आपस में अपनी सभ्यता का प्रकटन कर रहे थे। हाथ में बीयर का मग लेकर दोनों एक दूसरे को देखे रहे।

'गांव का क्या हाल है?'

आलबी ने पूछा।

'प्रेमा के आंसू अभी तक बंद नहीं हुए हैं।

'वाई?' वह क्यों रो रही है?'

आलबी अद्‌भुत होकर पूछने लगा।

'वह आपका इंतजार कर रही है।'

'मेरा? 'क्यों'

'वह आपके अलावा और किसी से शादी नहीं कर सकती। आपके साथ सोयी थी।'

'या वी हैड सेक्स। इसलिए मैं उससे शादी क्यों करूं?' आलबी ने पूछा।

'गंगाधर के समझ में यह नहीं आया कि आगे क्या बोलूं।

आलबी आगे बोलने लगा –

आपके गांव आने से पहले मैं छुट्टी बिताने के लिए 'थाईलैंड' गया था। वहां दस–पंद्रह लड़कियों के साथ सोया था। उनमें से किसी ने भी मुझ से शादी की बात नहीं की।

गंगाधर का विम्मिष्ठ बढ़ गया। उसके गले में एवं मुंह पर एक कड़वापन महसूस होने लगा।

'प्रेमा द्वारा भेजे गये खत नहीं मिले आपको?'

'मिले।'

'उसने आपके बच्चे को जनम दिया।'

'दाट ईस हेर फालट।' 'वह पिल्स लेना भूल गयी थी' – आलवी ने कहा।

गंगाधर को हाथों का बीयर उसके मुंह पर फेंकने का मन हुआ। उसके हाथ धीरे–धीरे कांपने लगे।

आलबी ने अपने कोट की जेब से एक पाकिट मालबरो निकाली और उसमें से एक सिगरेट निकालकर माचिस से उसे जलाने लगा।

गंगाधर पीये बिना मग लेकर बैठा रहा। बीयर गले से उतर नहीं रहा उसे लगा कि उसका सिर चकरा रहा है और आंखें जल रही हैं। क्या यह

सिगरेट की धुंए से होगा? थोड़ी शुद्ध वायु लेने के लिए वह उठकर बाहर की ओर चलने लगा। हाथ में मग लेकर आलबी भी पीछे आ गया।

'अगले साल मैं आऊंगा। प्रेमा से कहना।'

'नहीं, आप कभी मत आना।'

'मि. गंगाधर.....'

'हम आपको आने नहीं देंगे।'

'यह आप बोल रहे हैं न?'

आलबी हंसने लगा।

जब मैं 'एअरपोर्ट' पर उतरूंगा तब आपके 'पर्यटन विभाग' की लड़कियां हारों की माला लेकर हमारा इंतजार कर रही होंगी, है न?'

गंगाधर ने आलबी के मुख पर देखे बिना विदा लिया। रात को नौ बजे के बाद भी मकानों के उपर और सड़कों पर सूर्य की किरणें पड़ रही थीं। बचपन में चरित्र पुस्तक में जो पढ़ा था वह उसने याद किया।

'सूरज न ढ़लने वाला साम्राज्य।'

गाड़ी में एक परिवार

गाड़ी में एक परिवार

गाड़ी की भीड़ देखकर वेलायुधन 'नायर'[1] ने स्वयं से पूछा कि मैं क्यों रोज इस तरह दूसरी श्रेणी में यात्रा कर रहा हूं। प्रथम श्रेणी या वातानुकूल में यात्रा करने का हैसियत उसकी है। उनके पास धन–संपत्ति तो बहुत है। लेकिन बड़ी श्रेणियों में यात्रा करना उसको पसंद नहीं है।

आरक्षण करवाने से भी उसे ठीक तरह से बैठने के लिए जगह नहीं मिलती। सारी सीटों पर यात्रियों ने कब्जा कर लिया था। क्या उन लोगों के पास भी आरक्षित टिकिट होगा? वेलायुधन नायर ने एक कोने में कसके बैठा। ऐसे अवसरों पर अपना दुबला शरीर उसके लिए एक अनुग्रह हो जाता है।

'एक्सप्रेस' होकर भी गाड़ी 'लॉकल' की तरह चल रही है। अनावश्यक मौके पर हिल भी रही थी। बीच–बीच में असहनीय शोर भी मचाने लगी। 'तू अच्छे खानदान वाला नहीं है।' वेलायुधन नायर ने कहा।

दोपहर की तेज गर्मी में एक मिनट की झपकी से वह किसी बच्चे का रोना सुनकर जाग गया। सामने वाली सीट पर एक छोटा परिवार बैठाा हुआ था।

नायर – एक प्रत्येक जाति वादी संज्ञा है। नाम के साथ यह संज्ञा जोड़ने की रीति है।

मां की गोद में लेटा बच्चा रो रहा है। मां के लाख कोशिश के बाद भी बच्चे ने रोना बंद नहीं किया।

खिड़की के बाहर देखते हुए बाप ने मुड़कर पैरों के बीच वाली थैली में से एक दूध की शीशी निकाला। कपड़े में लपेटी हुई वह शीशी धोने के लिए वह 'वाशबेसिन' के पास चला गया।

वहां पैर रखने की भी जगह नहीं थी। दरवाजे की ओर एवं पेशाब खाने के चारों ओर यात्रियों की भीड़ थी। दूध की शीशी धोने में उसने बहुत समय लगाया।

पत्नी के पास बैठकर उसने थैली में फिर से कुछ ढूंढा। एक बोतल, 'पेप्सी' बाहर निकाल ली। उसकी दांत बहुत ही मजदूत होंगे! कितनी आसानी से उसने बोतल को खोल दिया! दूध की शीशी में पेप्सी डालकर चूचुक लगाकर उसने पत्नी को दे दिया। मीठा चुचुक ओंठों पर लगते ही बच्चा चुप हो गया।

'बेटी है क्या?'

चूसकर 'पेप्सी' पीने वाले बच्चे को देखकर वेलायुधन नायर ने पूछा।

'बेटा है।'

मां ने कहा।

'कितने महीने का हुआ?'

'ढाई।'

यह उत्तर बाप ने दिया। उसके बाद वह वत्सलय के साथ अपने बेटे को देखने लगा।

पांच बजते ही भीड़ और बढ़ गयी। ऑफिस वाले कर्मचारियों का एक बड़ा 'ग्रुप' गाड़ी में चढ़ा। अच्छा हुआ कि तब तक उसको उतरने का स्टेशन आ गया था। कपड़ा और दवाई लिए अपना छोटा ब्रीफकेस लेकर वह स्टेशन पर उतर गया। गाड़ी आगे बढ़ी तो उसे पता चला कि वह जहां उतरा, वह उसका स्टेशन नहीं था।

———————

माकोभाई और ड्रैगण

माकोभाई और ड्रैगण

कूलीवाला माकोभाई[1] के गर्दन में दर्द। दोपहन को जो ठंडीहवा चली थी, उसी समय शुरु हुआ था यह। घनी बारिश के स्थान पर धूप निकल आई, फिर भी उसका दर्द नहीं गया। बोझ उठाकर जीविका कमाने वाला होकर भी भगवान ने मेरे गर्दन को ही दर्द क्यों दिया? साढ़े पांच फूट वाले इस शरीर में और बहुत सारे जगह है? माकोभाई ने खुद से पूछा।

सिर तो बिल्कुल भी हिला नहीं सकता था, इसलिए एक बीड़ी पीता हुआ वह बरामदे में सीधा बैठ गया। आंखें तो एक ही रेखा पर टिकी हुई थी, इसलिए वह बस एक ही दृश्य देख सकता था। धोती को एक ओर तह के कपड़ा धोने वाली 'रेवती'। पड़ोसी जुलाहे 'बालन'[2] की बीबी है वह । पानी गिर गिर उसका पूरा बदन गीला हो गया था। दूसरे के पानी को इस तरह देखने पर वह कुण्ठित होने लगा। लेकिन किसी और चीज को देखने के लिए गर्दन हिलाना पड़ेगा। यह काम उससे नहीं होगा। इसीलिए रेवती को ही देखने का उसने निश्चय किया, उस अपराध का बोध आ जाने पर उसने बार–बार लंबी सांस लेने लगा। मेरा दर्द और कोई न सही, भगवान तो समझ पाएगा, यह उसका विश्वास था।

---

1 मको भाई – पात्र का नाम

2 बालन – जुलाहे का नाम

ऐसे ही बैठे रहने के बीच पीछे से एक आवाज सुनाई दी –

'यह क्या बैठना है, आकर कंजी तो पी लो न।'

माको भाई की पत्नी आकर पास खड़ी हो गयी। फिर भी उसे वह शब्द जुलाहा बालन का शब्द जैसा लगा। बीस सालों से सुनने वाली बीबी का शब्द, बालन का शब्द जैसा लगने का कारण उसकी समझ में नहीं आया! शरीर के और सब अवयवों को छोड़कर गर्दन पर ही दर्द आने की जो दुरुहना है उसी दुरुहता की गंध यहां भी आ गयी। आजकल जो कुछ भी हो रहा है, वह सब माको भाई के समझ से बाहर है। संशय और प्रश्नों से उसका पीछा कभी नहीं छूटना।

'कंजी इधर दे दो।'

माको भाई ने कहा।

'यहां बैठकर पी लेगा क्या? पत्नी ने पूछा'

'हां, यहां बैठकर पीलेगी।'

बीबी ने कंजी दे दिया। माको भाई कंजी पीने लगा।

'हमारी बेटी की एक इच्छा है।'

'हूं?'

'उसको चौनीस चावल खाना है।'

'वह कैसा चावल होता है।?'

'वह तो...' एक मिनट रूककर वह अंदर की ओर देखकर चिल्लाई।

'श्रीलता, थोड़ा इधर आओ, तेरा बापू बुला रहा है।

आवाज सुनकर उनकी दोनों मुर्गियां अंगन में आकर खड़ी हो गयी। दो–दो एकदम सफेद मुर्गियां। दोनों आकर माको भाई के दृष्टि को पार किया तो उसकी लंबी दृष्टि को सलीब का रूप आ गया।

गुठनों तक की फटी हुई घाघरा पहनकर श्रीलना आकर दरवाजे पर खड़ी हो गयी।

'बापू पूछ रहे हैं.... वह कैसा चावल होता है?'

'वह एक चैनीस खाना है बापू.... 'चाउमीन'।'

यह कहते समय उसकी आंखें चमक रही थी। यह सुनकर वह तो एक दम चकित हो गया, क्योंकि औरत ने जो कहा वह थोड़ा बहुत उसकी समझ में आ रहा था, लेकिन अभी–अभी बेटी ने जो कहा, वह लेशमात्र भी उसकी समझ में नहीं आया।

आपने घाट पर एक नया रेस्टोरेंट देखा होगा न? वहीं 'चात्तू'[3] वैद्य के दुकान के बगल में...

उस ओर गए हुए बहुत दिन हो गए थे। श्रीलता की मां के घर जाना हो तो उसे उस ओर जाना पड़ता था। फिर भी वहां वैद्य के दुकान के पास, कुछ नयी चीज उसने भी देखा था।

'शाम को घाट पे जाकर चावल खा लेंगे न। बच्ची की एक इच्छा है न....'

'डेढ़ रूपया है, चलेंगे क्या?' – माकोभाई को गुस्सा आने लगा था।

मां ने बेटी को देखा।

'इससे हो जाएगा क्या?'

माको भाई ने फिर से पूछा। मां–बेटी चुप हो गयी।

'यहां कोई दर्द से 'मरने जा रहा है'। तभी मां–बेटी को चौनीस चावल खाने को चलना चाहिए। चली जाओ यहां से...'

माको भाई चिल्लाने लगे। मां–बेटी अंदर चली गयीं।

---

3 चात्तू – *वैद्य का नाम।*

वह एक और बीड़ी लेकर पीने लगा।

अंदर से आने वाली सिसकियों ने बीड़ी का मजा नष्ट कर दिया। चैन से एक बीड़ी भी नहीं पीने देती। उसको गुस्सा आ गया। बापू को सुनाने के लिए दरवाजे के पीछे से श्रीलता रो रही थी।

'रो मत बेटी' मां ने कहा।

'बापू तुझे ले जाएगा।'

'प्रीती भी गयी और सुजा भी...' श्रीलता सिसकने लगी।

'एक दिन हम भी जाएंगे....'

'आज ही जाना है। नहीं तो कल से मैं स्कूल नहीं जाउंगी।'

'जिद्द मत कर बेटी, बापू की गर्दन में दर्द हो रहा है न?' बिन काम किए पैसा कहां से आएगा?

'श्रीलता ने जोर से सिसकी ली।'

आंखों से आंसू जोर–जोर से आने लगे।

बेटी को रोते देखकर मां व्यथित हो गयी। माको भाई उसकी जल्दी मानेगा नहीं, यह उसे पता था, बीस साल से उसके साथ जो रह रहे हैं न।

भार उठा–उठाकर उसका शरीर ही नहीं मन भी बज्र हो गया है। दिन बीतते बीतते ही उसकी देह तो दुर्बल होती जा रही है, लेकिन मन की कठिनता बढ़ती जा रही है, इस बात पर उसकी ध्यान गया था। यहीं नहीं वह झूठ बोलने, चोरी–चुपके आने–जाने और बहाना बनाने लगे है, यह भी वह जान गयी थी।

सीधा सादा माको भाई आजकल उलटा रास्ता लेकर घर आना शुरु किया हैं। खेत से सीधा आकर 'मदरसा' का मोड़ लें तो घर आ गया। इतने सालों से उसी रास्ते से आने वाले माको भाई कुछ दिनों से खेत का रास्ता न लेकर मिल का चक्कर लगाकर 'कन्नन'[4] मास्टर का घर पार कर, बालन का बाड़ा पाकर घर आने लगा है।

रेवती काम खत्म करके चली गयी थी। फिर भी उसे लगा कि उसकी एक छाया वहां से जोर–जोर से कपड़ा धो रही है। बहुत देर से उसी को बैठकर देखने से ऐसा लगा रहा था, यह जानने का अकल माको भाई को नहीं था। वह बस देखना जानता था। देखने का जो शास्त्र होता है, वह उसे पता नहीं था। सर हिलने के डर से वह उठकर अंगन में जाकर खड़ा हो गया।

---

4 कन्नन – मास्टरजी का नाम।

'सुनते हो, लड़की ने अभी तक पानी भी नहीं पिया।'

'हूं?'

'तुम्हारा मन तो पत्थर है। कहीं से कुछ पैसा बनाने की सोच।'

वह घृणा की दृष्टि से पति को देखकर बोलने लगी।

'मेरे पास एक रास्ता है।' वह बोलने लगी।

'हूं?'

'मुर्गियों को बेचेंगे? आसू मुसलियार ने कल भी आकर पूछा था।'

मुसलियार का छोटा बेटा सुबैर मस्किट से छुट्टी पर आया हुआ है।

'शैतान, अंडा देने वाली मुर्गियां हैं। उसको बेच डालने पर चार पैसा कमाने का रास्ता बंद हो जाएगा।' – माकोभाई चिल्लाने लगा।

'तो फिर लड़की को रो रोकर मरने दो।'

धूप ढलने लगी। दरिया के उस पार से मिट्टी का कुंभ भेजने को आने वाला कुम्हार पेड़ की छाया में सो रहा था। कौए इधर–उधर उड़ रहे थे।

श्रीलता अभी तक चटायी से उठी नहीं। अभी तक उलटी लेटी हुई वह अब एक तरफ की ओर लेटी हुई है। गालों पर आंसू के निशान हैं। रो–रोकर बच्ची थक गयी है। फिर भी बाहर बैठने वाले पर कुछ असर नहीं पड़ रहा है। ऐसा सोचते ही माको भाई आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया।

'तैयार हो जाओ।'

उसने बोला। वह धोती बदल चुका था। उसके उपर कमीज भी पहनी हुई थी।

श्रीलता ने धीरे से आंखें खोल दीं।

दोनों मुर्गियों को मुसलियार को दे दिया। श्रीलता फटाफट उठ गयी।

आंखें पोंछकर कुएं के पास जाकर मुंह साथ किया। एक मिनट के अंदर घाघरा बदलकर, पाउडर लगाकर वह तैयार हो गयी। मां भी तैयार हो गयी। सीढ़ियां उतरते समय उसने बाडे की तरफ एक बार देख। वासू[5] मास्टर की पत्नी दमयंती भी चैनीस रेस्टोरेंट में गयी थी।

'खाना थोड़ा मुश्किल है। धागे की तरह लग रही है न?' दमयंती ने कहा।

---

5 वासू – मास्टरजी का नाम।

'धागे जैसा चावल होता है कया?' श्रीलता की मां ने हैरान होकर पूछा।

'वह चीनीयों का चावल है न?' 'चैनीस चावल का नाम सुनते हैं वे[6] तो तैयार हो गए थे।' 'वे तो कम्यूनिस्ट हैं न।' – दमयंती बोलती जा रही थी।

बाडे के उस ओर कुएं के पास दमयंती खड़ी थी। सच बोलें तो श्रीलता को ही नहीं उसकी मां को भी घाट की नए दूकान से खाने की इच्छा थी।

गर्दन हिला नहीं सकते थे, इसलिए माको भाई तो बिल्कुल सीधा चल रहा था। उसके पीछे थोड़ी सी शर्मीली होकर नीचे देखकर श्रीलता और सबसे पीछे गर्दन में दर्द न सही फिर भी सिर खड़ा करके श्रीलता की मां भी चलने लगी। गली से चलकर खेत पार कर वे लोग घाट वाले रास्ते पर पहुंच गए। घाट में आने वाले माल गाड़ियां जाने का दृश्य वे देख सकते थे। झुर्रियां पड़ी मुख की तरह लग रही थी दरिया!

ढांचे पे ढले ड्रैगण के तस्वीर के सामने माको भाई और परिवार बैठ गया।

---

[6] वे – वासू मास्टरजी

'मुसलियार का दिया हुआ पैसा गोद में ही है न', माको भाई ने एक बार टटोलकर देखा। राजापार्ट वालों की तरह पगड़ी और चमकने वाले बटन लगाया हुआ कपड़ा पहना हुआ एक आदमी आकर उसको एक किताब दिया। घबरा गए बापू के हाथ से 'मेनू' लेकर उस पर एक बार नज़र मारकर श्रीलता ने बोली :

'चौमीन और चिल्ली चिक्कन।'

'सूप?'

'चिक्कन सूप, वण इन टू थ्री।'

कुछ देर बाद राजापार्ट वाला ने तीन कटोरे पर गरम सूप लेकर वापस आ गया। उसके बाद थाली पर 'चौमीन' और 'चिल्ली चिक्कन' आ गया। गर्दन के दर्द के कारण माको भाई की दृष्टि दीवार पर टंकी हुई बड़े चित्र पर अटक गयी। मुंह, नाक एवं आंखें से आग उगलने वाले उस अनजान पशु ने उसे चौंका दिया। उससे आंखें चुराने का मन हुआ। लेकिन गर्दन के दर्द ने उसे उसकी अनुमति नहीं दी।

बेचारा माको भाई निस्सहाय होकर उसी ओर देखता रहा।

BIBLIOGRAPHY

सहायक पुस्तकें और पत्रिकाएं

हिन्दी किताबें :

जी गोपीनाथः *अनुवाद की समस्याएं*

————————: *अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग*

————————: *अनुवाद सिद्धांत*

भोलानाथ तिवारीः *अनुवाद कला*

————————: *भारतीय भाषाओं से हिन्दी अनुवाद*

————————: *अनुवाद विज्ञान की समस्याएं*

एन. विश्वनाथ अय्यरः *अनुवाद भाषा समस्याएं*

गार्गी गुप्तः *अनुवाद चिंतन के सैद्धांतिक आयाम*

————————: *अनुवादक बोध*

————————: *अनुवाद कला के मूल स्रोत*

————————: *अनुवाद का व्याकरण*

————————: *अनुवाद कला के मूल स्रोत*

कैलास चंद्र भाटियाः अनुवाद कला – *सिद्धांत एवं प्रयोग*

डॉ. बाबूराव जोशीः *प्रबंध प्रसून*

जादव प्रसाद अग्रवालः *शब्दार्थ प्रकाश*

देवी शंकर द्विवेदीः ***भाषा और भाषिकी***

एल.एन. शर्मा 'सौमित्र': ***अनुवादक चिंतन***

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामीः ***अनुवाद सिद्धांत और समस्याएं***

डॉ. आरसुः ***साहित्य अनुवाद***

डॉ. आदिनाथ सोनटर्कः ***अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग***

जे.सी. कैटफोर्डः ***अनुवाद का भाषिक सिद्धांत***

राजमल बेराः ***अनुवाद क्या है?***

भोलानाथ तिवारी और नरेश कुमारः ***विदेशी भाषाओं से अनुवाद की समस्याएं***

सुरेश कुमारः ***अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा***

अंग्रेजी किताबों का नामः

Booth: *Aspects of Translation*

C. Balupuri: *Translation a Serious Business*

Dr. Y.C. Bhatnagar: *Theory and Practices of Translation*

Pisarska: *Creativity of Translators*.

Santa Ramakrishana: *Translation and Multi Lingualism*

Tim Parks: *Translation Styles*

Yudina: *Improve Interpreting Skills*

मलयालम किताबों का नाम :

संपादकः अय्यप्प पणिक्कार, एम.के. सानू, एम.के. अप्पन, और आर. नरेन्द्र प्रसादः ***सौ वर्ष सौ कहानियां***

अच्युतनः ***छोटी कहानियां कल–आज***

एन. प्रभाकरनः ***कहानी ढूंढने वाली कथा***

डॉ. एन. राजनः ***प्रक्षोभ की ज्वालाएं***

एम. मुकुन्दनः ***माक्सिंगोर्की का प्रभाव मलयालम में***

————————: ***तकषि से लेकर मुकुन्दन तक।***

डॉ. जयकुमारः ***बषीर का कथा साहित्य – एक अध्ययन,***

एम.के. हरिकुमारः ***अहंबोध की सर्गात्मकता***

के.पी. अप्पनः ***कथा–आख्यान और अनुभव***

जर्नल्सः

भाषा – डॉ. शशि भारद्वाज

इंद्रप्रस्थ भारती – डॉ. रामशरण गौड़

गगनांचल – कन्हैयालाल नंदन

दस्तावेज – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

समकालीन भारतीय साहित्य – गोपीचंद नारंग

साक्षात्कार – कपिल तिवारी

परिप्रेक्ष्य – राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ।

हिन्दी से मलयालम में अनूदित रचनाओं की सूची

भूले बिसरे चित्र – भगवती चरण शर्मा
मंगी मरंज चित्रंगल – जी.सत्यन

आश्रम की नर्तकी – भगवती चरण शर्मा,
आश्रमत्तिले नर्तकी – वी.सी. नारायणन

फिर एक बार – श्रीकांत वर्मा
ओरिक्कल कूडी – के. रवी वर्मा

कड़ियां – भीष्म साहनी,
काण्णिकल – वी.सी. कृष्णन नंब्यार

प्रेमचंद की चुनी हुई कहानियां – एम. श्रीधरन मनोन
प्रेमचंद की अच्छी कहानियां – पी. शंकर

गोदान – प्रोमचंद
गोदानम् – ई.के. दिवाकरन पोटी

रंगभूमि – प्रेमचंद
रंगभूमि – ई.के. दिवाकरन पोटी

निर्मला – प्रेमचंद,
निर्मला – वी.वी. जोसफ

गबन – प्रेमचंद
वंचना – ई.के. दिवाकरन पोटी

तितली – जयशंकर प्रसाद
पूपांटा – के.जी. नाथ

एक तारा – प्रभाकर माचवे
ओरु नक्षत्रम – अभयदेव

Jawaharlal Nehru University
Library